Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

ण य संखयमाहु जीवियं,
तह वि य बालजणो पगब्भई।

टूटे हुए जीवन-सूत्र को जोड़ा नहीं जा सकता। फिर भी अज्ञ मनुष्य हिंसा आदि में धृष्ट होता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 38 • 27 जून - 3 जुलाई, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 25-06-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

नैतिकता के शक्तिपीठ में आचार्यश्री तुलसी का २६वां महाप्रयाण दिवस

संघर्ष में समत्व का भाव रखना महापुरुष का लक्षण : आचार्यश्री महाश्रमण

नैतिकता का शक्तिपीठ, गंगाशहर, १७ जून, २०२२

आषाढ़ कृष्णा तृतीया आज से २५ वर्ष पूर्व तेरापंथ के नवम् अधिशास्ता गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का गंगाशहर के तेरापंथ भवन में महाप्रयाण हो गया था। जिस पावन जगह पर उनका अंतिम संस्कार किया गया था, वह स्थान है–नैतिकता का शक्तिपीठ, आचार्य तुलसी समाधि स्थल। आज उनका २६वाँ पुण्य दिवस संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ आयोजित कर रहा है।

आचार्य तुलसी के परंपरा पट्टधर, वर्तमान के तुलसी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महती कृपा बरसाते हुए अपने दोनों पूर्वाचार्यों–आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का जिस दिन जहाँ महाप्रयाण हुआ था वहीं पर वह वार्षिक दिवस आयोजित करवाया है। सरदारशहर में अध्यात्म के शांतिपीठ पर वैशाख कृष्णा एकादशी को आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का १३वाँ महाप्रयाण दिवस का आयोजन हुआ था तो आज यहाँ नैतिकता के शक्तिपीठ पर गुरुदेव तुलसी का २६वाँ महाप्रयाण दिवस आयोजित हो रहा है।

नैतिकता के शक्तिपाठ परिसर में नैतिक क्रांति के पुरोधा, जन-जन को नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने दादा गुरु का पुण्य

स्मरण-गुणगान करते हुए फरमाया कि आज आचार्यश्री तुलसी का २६वाँ महाप्रयाण दिवस है। संभवतः यह पहला ही प्रसंग है कि मूल दिन जो महाप्रयाण का है, उस दिन तेरापंथ के आचार्य गुरुदेव तुलसी के समाधि स्थल के परिपार्श्व में महाप्रयाण की पुण्यतिथि का कार्यक्रम मना रहे हैं।

इससे पहले न आचार्यश्री महाप्रज्ञजी यहाँ विराजे, न मैं कभी आया। इस बार भी आना तो नहीं होने वाला था, परंतु यह शक्तिपीठ की जो टीम है, उनका चिंतन-श्रम रहा आखिर मेरे से स्वीकृति ले ली। सरदारशहर में भी पहला अवसर था कि वार्षिकी तिथि पर मैं आचार्य महाप्रज्ञजी की समाधि स्थल पर था। सन् २०२२ का ऐसा वर्ष आया है कि दोनों गुरुओं के मूल महाप्रयाण दिवस पर उनके समाधि स्थल में आने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ।

आचार्य तुलसी एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी थे। बाल्यावस्था में ही आचार्यश्री कालूगणी के पास दीक्षित हो गए थे। ग्यारह वर्षों का काल उनका विद्यार्थी-शिक्षक के रूप में था। होनहार साधु के रूप में रहे और मात्र २२ वर्ष की अवस्था में वे हमारे धर्मसंघ के युवाचार्य बन गए, आचार्य बन गए। जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की ये अद्वितीय घटना है। इतने बड़े धर्मसंघ का इस छोटी उम्र में आचार्य बनना विरल बात है।

छोटी उम्र के आचार्य लंबे काल तक धर्मसंघ को संभाल सकते हैं। मगन मुनि ने तो उन्हें उस समय ८२ वर्ष का बताया था। उनकी बात सही भी हुई। गुरुदेव तुलसी ८२ वर्ष की अवस्था में ही कालधर्म को प्राप्त हो गए थे। आज का दिन आया तब गुरुदेव तुलसी ८३वें वर्ष में चल रहे थे।

युवावस्था कार्य करने के लिए अच्छी उम्र हो सकती है। कोलकाता और दक्षिण भारत की लंबी यात्राएँ कीं। उनका विरोध भी हुआ, संघर्ष की स्थितियाँ भी आईं। संघर्षों में समत्व का भाव रखना महापुरुषों का एक लक्षण होता है। संघर्ष में भी हर्ष बना रहे, यह बड़ी बात है।

परमपूज्य आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन किया जो आचार्य तुलसी और तेरापंथ को व्यापक रूप देने का एक बड़ा आधार बना था। अणुव्रत का कार्य मानव जाति के उत्थान का कार्य था। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान चला। समण श्रेणी की स्थापना हुई। अनेक संस्थाएँ उनके आचार्य काल में स्थापित हुई। उन्होंने इन संस्थाओं में प्राण प्रतिष्ठा स्थापित करने का भी कार्य किया।

(शेष पृष्ठ २ पर)

शांति के लिए संसाधनों की नहीं अपितु साधना की अपेक्षा : आचार्यश्री महाश्रमण

हंसा रिसोर्ट-रायसर, १६ जून, २०२२

शांत सौम्य मूर्ति, आध्यात्मिक शांतिप्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में शांति का बहुत महत्त्व है। आदमी शांति और सुख से जीना चाहता है।

शांति एक ऐसा तत्त्व है, जो पैसे से नहीं मिलता है। सुविधा तो संसाधनों से मिल सकती है, पर शांति साधना से मिलती है। साधना ही शांति का आधार है। राग-द्वेष और चारों कषाय कितने प्रतनू पड़े वह शांति है, यह एक प्रसंग से समझाया कि कठोर जीवन जीने वाले साधु प्रसन्न रहते हैं, पर सुख-सुविधा में रहने वाले राजकुमार प्रसन्न नहीं रहते हैं।

वर्तमान में जीने वाला और संतोष से जीने वाला सुखी रह सकता है। संयम-त्याग से शांति प्राप्त हो सकती है। लालसा से मुक्त रहने वाला, कल की चिंता न करने वाला शांति को प्राप्त कर सकता है। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि कल की चिंता आज मत करो। चिंता करने वाला इससे बोध ले सकता है।

गृहस्थ के जीवन में भी इच्छा परिमाण हो। उपभोग, परिभोग की सीमा करें। संतोष धारण करते हैं तो शांति मिलती है। भय, गुस्सा, चिंता अशांति के कारण हैं। अभय की साधना हो। शांति की साधना से आत्मा निर्मल रहती है, मोक्ष की दिशा में आदमी आगे बढ़ सकता है। आदमी के भीतर जो भाव हैं, वो बाहर प्रकट हो जाते हैं।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जून - 3 जुलाई, 2022

✦ *सामायिक आत्मा का भोजन और नमस्कार महामंत्र की माला आत्मा का अल्पाहार (नाश्ता) है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

धरती पर तीन रत्न-पानी, अन्न और सुभाषित : आचार्यश्री महाश्रमण

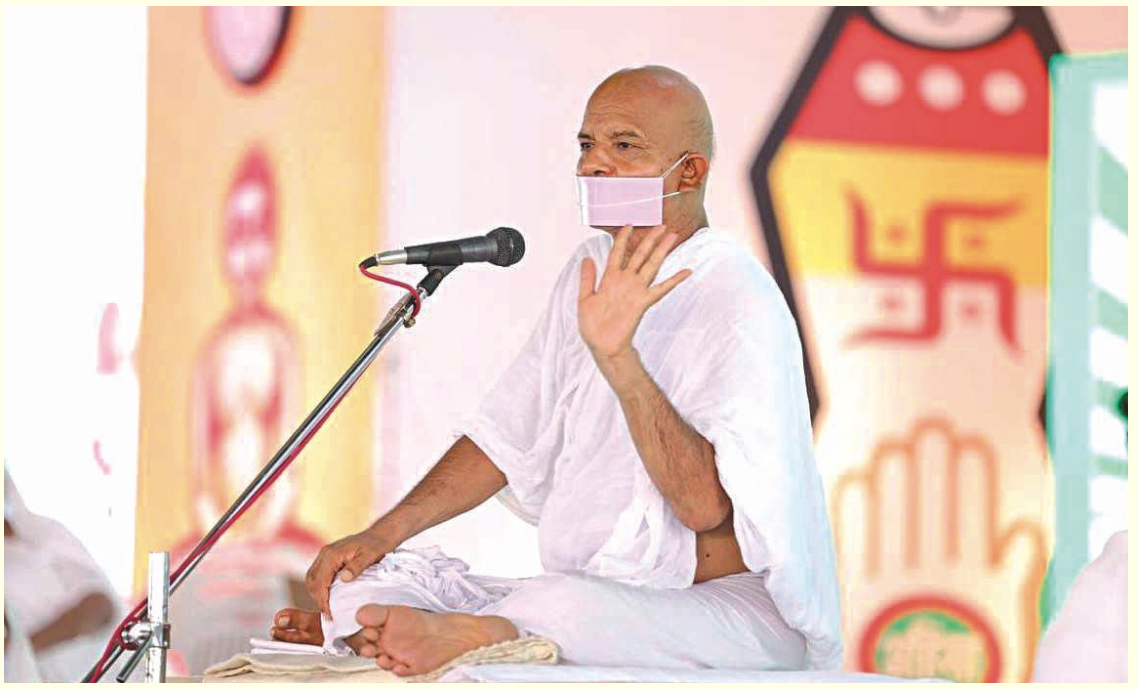

तेरापंथ भवन, गंगाशहर,
१५ जून, २०२२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी का अपनी धवल सेना के साथ तेरापंथ भवन, गंगाशहर प्रवास का द्वितीय दिवस। आज प्रातः वृहद् मंगलपाठ के समय भी हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ पूज्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित थे। दो दिन से मौसम भी अनुकूल हो रहा है।

नंदनवन तेरापंथ के गणमाली आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी जीवन चलाने के लिए रोटी-पानी और हवा ये तीनों प्रथम कोटि की आवश्यकताएँ हैं। इन तीनों में भी हवा सबसे ज्यादा आवश्यक है।

कई लोग तिविहार संथारा करते हैं, उसमें भोजन तो बंद है, पर पानी लिया जाता है। चौविहार संथारा बड़ा मुश्किल है, उसे सोचकर करना, कराना चाहिए। कहा गया है कि धरती पर तीन रत्न हैं—पानी, अन्न और सुभाषित। शास्त्रों की अच्छी वाणी कितना आध्यात्मिक संपोषण दे सकती है। आदमी की अच्छी वाणी कितना संबल दे सकती है। जो पत्थर के टुकड़ों को रत्न कहते हैं, वो तो मूढ़ लोग हैं।

पानी का अपना महत्त्व है, यह एक दृष्टांत से समझाया कि समय पर दो गिलास पानी का बहुत मूल्य चुकाना पड़ सकता है। कई बार पानी की किल्लत या जल संरक्षण की बात आती है।

भूख लगेगी तो रोटी काम आएगी। हीरे-पन्ने काम नहीं आएँगे। इसलिए अन्न को रत्न कहा गया है। वाणी थोड़ी अच्छी बोल देते हैं, तो वह भी सुभाषित रत्न हो जाता है। वाणी से कितना अंतर आ जाता है, यह भी एक प्रसंग से समझाया। उपहार का भी अपना महत्त्व होता है, पर वाणी सुभाषित हो।

पदार्थ हमारे काम आते हैं, पर पदार्थों में मोह-आसक्ति नहीं करना यह साधना का तत्त्व है। गृहस्थ परिवार का पालन-पोषण करते हैं, पर अंतर्दिल में अनासक्ति रहे। मोह ज्यादा न करें। अनासक्ति अध्यात्म की साधना का सूत्र है।

उपासक-उपासिकाएँ बैठे हैं। उपासक तो एक तरह से आगे बढ़े हुए जानकार होते हैं। घर में रहते हुए भी कमल की तरह अनासक्त-निर्मल रह सकते हैं। कई उपासक तो बहुत समय देते हैं, सेवा देते हैं। कितनी यात्राएँ करते हैं, थोड़ी अनासक्ति आई होगी तभी सेवा देते हैं। उपासक श्रेणी में ज्ञान का, साधना का विकास, संयम का विकास होना भी चाहिए। उपासक श्रेणी बहुत उपयोगी श्रेणी है। कार्यकारी श्रेणी है, इस श्रेणी का भी खूब अच्छा विकास हो, शक्ति बढ़े, संख्या बढ़े, प्रसार हो, अच्छा है।

अनासक्ति एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, अध्यात्म की साधना में। हम साधु-साध्वी, समणी का जीवन तो अनासक्तिमय होना ही चाहिए। घर-परिवार, परिग्रह को छोड़ देना कितना बड़ा त्याग है।

शास्त्रकार ने उदाहरण दिया है, दो मिट्टी के गोलों का-एक आद्र दूसरा सूखा। आद्र गोले की मिट्टी दिवार के चिपक गई और सूखे गोले की मिट्टी लगी पर झड़ गई। चिपकी नहीं। आदमी सूखे मिट्टी के गोले की तरह रहे। आसक्ति होने से सघन कर्म-बंध हो सकता है। अनासक्त अवस्था में विशेष कर्म-बंध नहीं हो सकता। हमें अपने जीवन में अनासक्ति की साधना का प्रयास रहना चाहिए।

गंगाशहर में प्रवास हो रहा है। गंगाशहर के दिवंगत एवं वर्तमान में उपस्थित चारित्रात्माओं की पूज्यप्रवर ने स्मृति की। गंगाशहर का हमारे धर्मसंघ में अच्छा स्थान है। अनेक चारित्रात्माएँ गंगाशहर से हैं।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि परिवर्तन शाश्वत है, वह दो रूपों में होता है—एक सहज और दूसरा पुरुषार्थ द्वारा। प्रश्न है क्या मनुष्य अपने स्वभाव को बदल सकता है। उपदेश से स्वभाव को नहीं बदला जा सकता, यह नीति शास्त्र की मान्यता है। अध्यात्म शास्त्र का मानना है कि स्वभाव को बदला जा सकता है। अर्जुनमाली, अंगुलीमाल, बाल्मिकी आदि इसके उदाहरण हैं। आदमी में अपनी कमी को जानकर परिष्कार की भावना आती है। पूज्यप्रवर के उपदेश से लोगों का स्वभाव बदल रहा है। भीतर में परिवर्तन की बात हो तभी स्वभाव में परिवर्तन किया जा सकता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि विमल विहारी जी, मुनि प्रबोध कुमार जी, साध्वी दीपमाला जी, साध्वी कंचनबाला जी, साध्वी शुक्लप्रभाजी, साध्वी पुण्यप्रभाजी ने अपने भाव गीत, कविता व वक्तव्य से अभिव्यक्त किए।

मुमुक्षु समता, महिला मंडल अध्यक्षा ममता रांका, कन्या मंडल, तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़, तेरापंथ किशोर मंडल, तेरापंथ प्रचेता व तत्त्व प्रचेता ग्रुप, डागलिया बंधु, अर्चना, रंजना, मंजु, पुष्पा चोपड़ा, मनोज प्रियंका छाजेड़, राजेंद्र सेठिया (उपासक), संयम, नैतिक आंचलिया, सुमन सेठिया, कोमल एकता पुगलिया, विजय लक्ष्मी सेठिया, जयश्री बोथरा, प्रवीण मालू ने अपनी भावना परम पावन के स्वागत-अभिवंदना में अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जो व्यक्ति सत्य को जान लेता है, वह समझ लेता है।

संघर्ष में समत्व का भाव रखना...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आचार्य तुलसी समाधि स्थल पर ध्यान भी किया था। संस्था का अवलोकन भी किया था। संस्था के कार्यकर्ताओं में अच्छी स्फूरणा, सेवा-भावना रहे। अन्य संस्थाएँ भी अपनी धार्मिक, आध्यात्मिक गतिविधियों को गतिमान करते रहें। आज के दिन को विसर्जन दिवस के रूप में भी प्रतिष्ठा दी गई है। आचार्य तुलसी ने अपने पद का विसर्जन किया था, यह हमारे धर्मसंघ की विरल घटना है।

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने अपने जीवन में कितनों को आगे बढ़ाया था। आगम संपादन का कार्य भी आचार्य तुलसी के वाचनाप्रमुखत्व में हुआ था। अनेक रूपों में उन्होंने अपनी सेवाएँ दी थीं। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी कुछ अंशों में आचार्य तुलसी की ही कृति थी। उन्होंने उन्हें दीक्षित, शिक्षित और विकसित भी किया था। पद से आदमी शोभित होता है, तो पद भी आदमी से शोभित हो सकता है।

आचार्य तुलसी ने साध्वी झमकु जी, साध्वी लाडाजी और साध्वी कनकप्रभाजी को तीन-तीन साध्वियों को साध्वीप्रमुखा पद पर स्थापित किया था। मैंने साध्वी विश्रुतविभाजी को सरदारशहर में साध्वीप्रमुखा पद पर स्थापित किया है। वे भी अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी ने अध्यापन के क्षेत्र में भी कार्य किया था। कितनों को वे पढ़ाया करते थे। प्रवचन करने के साथ-साथ वे ज्ञानदाता भी थे। वे महान रचनाकार, साहित्यकार भी थे। उपासक श्रेणी के सदस्य बैठे हैं। गुरुदेव तुलसी के साथ में उपासक का कार्य शुरू हुआ था। उपासक श्रेणी भी आगे बढ़ी। ये श्रेणी आगे से आगे भी प्रगति करती रहे। कई उपासकों में ज्ञान भी अच्छा है। कई उपासक तो कितना समय लगाते हैं। मानो उनका गार्हस्थ्य थोड़ा कमजोर पड़ गया होगा, उपासकत्व बलवान बन गया होगा। उपासक श्रेणी भी खूब विकास करती रहे, अच्छी सेवा देती रहे।

ज्ञानशाला का उपक्रम भी गुरुदेव तुलसी के समय शुरू हुआ था। वह भी अच्छा क्रम प्रतीत हो रहा है। और आगे विकास होता रहे। गुरुदेव तुलसी के समय चतुरंगीणी अंतरंग धर्म परिषद चलती थी। हमारे साधु-साध्वियाँ व समणियाँ गुरुदेव तुलसी के अवदानों को आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहें।

उनका कितना उपकार हम पर है। उनके उपकारों से उऋण होना मुश्किल है। मैं गुरुदेव तुलसी का बार-बार स्मरण श्रद्धा के साथ कर रहा हूँ कि उनकी आत्मा जैसा हो संभालती रहे। किसी रूप में पथदर्शन-प्रेरणा देती रहे। हम भी अपनी अध्यात्म की दिशा में विकास करते रहें। मंगलकामना। पूज्यप्रवर ने ॐ जय तुलसी, तुलसी नाम---का जाप जप करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि आषाढ़ कृष्णा-३ गुरुदेव तुलसी के स्मरण का दिन है। २५ वर्ष बीत गए। उन्होंने धर्मसंघ को ऊँचाइयाँ दी। वे सहिष्णु थे। हृदय की कोमलता भी थी तो वज्र से अधिक कठोर भी थे व फूलों से अधिक कोमल थे। वे व्यक्ति दुर्लभ होते हैं, जो छोटी उम्र में अपने घर-परिवार को छोड़ देते हैं और पूरे धर्मसंघ का दायित्व ग्रहण कर लेते हैं। जनकल्याण के लिए उन्होंने पुरुषार्थ किया। छोटे-छोटे साधुओं का उन्होंने निर्माण किया था।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि दो प्रकार के पुरुष होते हैं—आग्नेय पुरुष और पारखी पुरुष। आग्नेय पुरुष-श्रेष्ठ गुण संपन्न होते हैं। ऐसे व्यक्ति विरले होते हैं। गुरुदेव तुलसी उनमें से एक थे। वे जागृत दृष्टा महापुरुष थे। उन्होंने दृष्ट स्वप्नों को पूरा किया। विरोधों के बावजूद आगे बढ़ते रहे। उन्होंने साध्वियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। जैन धर्म का विदेशों में प्रचार-प्रसार करने हेतु समण श्रेणी का अवदान दिया।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि आचार्य तुलसी का बाह्य और आभ्यंतर व्यक्तित्व आकर्षक था। उन्होंने जो संकल्प किया वो स्वप्न बनकर साकार हो गया। उन्होंने चिंताग्रस्त मानव को शांति का संदेश दिया। उन्होंने युगीन समस्याओं का समाधान अणुव्रत आंदोलन से दिया। उन्होंने कहा था—पहले इंसान इंसान फिर हिंदू या मुसलमान। वे मानवता के मसीहा थे। आचार्य तुलसी को हम आचार्यश्री महाश्रमण में देख सकते हैं। मैं दोनों महापुरुषों को वंदन करता हूँ। आप मानव जाति को नैतिकता का पथ दिखाते रहे और आपका आध्यात्मिक नेतृत्व हमें मिलता रहे।

गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी को अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए मुनि राजकुमार जी, मुनिवृंद, साध्वीवृंद एवं समणीवृंद ने गीत के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। उपासक श्रेणी ने भी गीत से अपनी भावांजलि दी।

राजस्थान सरकार के मंत्री बी०डी० कल्ला, नोखा विधायक बिहारीलाल बिश्नोई, शांति प्रतिष्ठान से महावीर रांका, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल, सुशील खटेड़, रोहित बैद, अणुव्रत समिति से जंवरीलाल गोलछा, शिवावस्ती महिला मंडल, हंसराज डागा एवं शांति प्रतिष्ठान के न्यासीगण ने अपनी भावांजलि दी।

रात्रि में धम्म जागरणा का आयोजन पूज्यप्रवर की सन्निधि में हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

हर व्यक्ति रहे अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक : आचार्यश्री महाश्रमण

गुसांईसर, २० जून, २०२२

श्रमण परंपरा के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जो लोग अपने कर्तव्य-अकर्तव्य को नहीं जानते हैं, उनका कभी भी ऐसा अनिष्ट हो सकता है, जिसके बारे में उन्हें कल्पना ही नहीं है। कर्तव्य जिसका जो होता है वह उसके लिए महत्त्वपूर्ण होता है।

कर्तव्य अलग-अलग हो सकता है, पर जिसका जो कर्तव्य है, उसमें व्यक्ति प्रमाद न करे। माता-पिता का कर्तव्य संतान के प्रति होता है कि वे लालन-पालन के साथ अच्छे संस्कार अपने बालक को दें। गलत काम को रोका नहीं तो वह अहितकर हो सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि बचपन में छोटी चोरी करने वाले को नहीं रोकने से वह बड़ा चोर बन सकता है। माता-पिता बालक को अच्छे संस्कार दें, यह भी एक प्रसंग से समझाया।

संतान का भी माता-पिता के प्रति कर्तव्य होता है कि वह उनकी आज्ञा का पालन करे, उनका सम्मान करे। शिक्षक का विद्यार्थी के प्रति कर्तव्य होता है कि वह विद्यार्थी को अच्छा ज्ञान दे। यह भी एक प्रसंग से समझाया। सरकार का कर्तव्य है कि जनता की सेवा करे। जनता का भी कर्तव्य है कि वह पूरा टेक्स चुकाए। आदमी ध्यान दे कि मेरा क्या कर्तव्य है।

साधु का भी कर्तव्य है कि वह अपने श्रावकों को अच्छा ज्ञान दे। सेवा का भी ध्यान रखे। सेवा की भावना हो तो खेतसी स्वामी जी जैसी। यह कर्तव्य भावना है। आदमी राजनीति में काम करे या समाज में काम करे, उसमें अप्रमाणिकता न हो। कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे तो आदमी आगे भी बढ़ सकता है और आत्मा का कल्याण धार्मिक कार्यों से हो सकता है।

साधु के उपदेशों का भी अच्छा असर हो सकता है। आज गुसांईसर आए हैं। यहाँ भी खूब धार्मिक, आध्यात्मिक शांति रहे। यहाँ से चौपड़ा, ललवानी व सामसुखा परिवार से होते थे। अब गंगाशहर बस गए। सबमें खूब अच्छा रहे।

परम पावन के स्वागत में स्थानीय सरपंच रामकैलाश गोदारा, स्थानीय पटवारी राकेश बिश्नोई, कांतिलाल चौपड़ा, नेमचंद चौपड़ा, चौपड़ा परिवार की बहनें, महेंद्र कुमार ललवानी, ललवानी परिवार की बहनों ने गीत, राजेंद्र चौपड़ा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने कहा कि देवता भी तीर्थंकर की सेवा में उपस्थित रहते हैं।

कर्नाटक राज्य स्तरीय प्रबुद्ध व्यक्तित्व कार्यशाला '३६० डिग्री' इंपैक्ट का आगाज

विजयनगर।

अभातेमम के तत्त्वावधान में तेमम द्वारा मुनि अर्हत कुमार जी एवं मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में कर्नाटक स्तरीय प्रबुद्ध व्यक्तित्व सेमिनार ३६० डिग्री इंपैक्ट कार्यशाला का आगाज स्थानीय अर्हम भवन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र तथा कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा आदिनाथ भगवान की स्तुति से हुआ। विजयनगर महिला मंडल की अध्यक्ष प्रेम भंसाली द्वारा पधारे हुए गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया गया।

अध्यक्ष नीलम सेठिया ने कार्यशाला के प्रतीक चिह्न का अनावरण कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

कार्यशाला के प्रथम सत्र का शुभारंभ राष्ट्रीय परामर्श मंडल की सदस्य लता जैन द्वारा साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश वाचन के साथ हुआ।

मुनि रश्मि कुमार जी ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम की प्रमुख वक्ता मनोचिकित्सक एवं लाइफ कोच शिखा शर्मा ऋषि का परिचय कोमल भंसाली द्वारा दिया गया। शिखा शर्मा ने अपना वक्तव्य दिया।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि आज के तकनीकी युग में महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं हैं, वह अपनी सजगता तथा विवेकशीलता से घर परिवार के साथ समाज को स्वस्थ संस्कारों का सिंचन कर सकती है। महिला मंडल की सदस्यों ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया का परिचय विजयनगर मंडल की उपाध्यक्ष महिमा पटवारी द्वारा दिया गया। नीलम सेठिया ने अपने वक्तव्य में बताया कि बेटे और बेटी को लेकर समाज में जो दुराव की भावना है, उससे हम किस प्रकार बाहर निकल बेटे-बेटी के बीच संतुलन पैदा कर सकते हैं।

प्रबुद्ध व्यक्तित्व के धनी विक्रम जोशी का कन्या मंडल की कन्या प्रिया बाबेल ने परिचय दिया। जोशी ने बताया कि किस प्रकार एक नारी माता, बेटी, बहन आदि विभिन्न दायित्व का निर्वाह करती है।

लेखक एवं मोटीवेटर श्रेया कृष्णन का परिचय कन्या मंडल की खुशी गांधी द्वारा दिया गया। आज की भागदौड़ की जिंदगी में हम स्वयं के लिए कुछ वक्त निकालकर किस प्रकार अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं श्रेया ने इसके गुर सिखाए।

कार्यशाला का संचालन बरखा पुगलिया द्वारा किया गया। मुनिश्री के मंगल पाठ से प्रथम सत्र समापन किया गया।

द्वितीय सत्र का शुभारंभ प्रेरणा गीत की स्वर लहरियों के साथ हुआ। द्वितीय सत्र–विषय : 'रिश्तों की सामंजस्यता पर पेनल द्वारा चर्चा-परिचर्चा' चर्चा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों का समाधान शिखा शर्मा एवं नीलम सेठिया ने दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया सहित टॉक शो में डॉ० शिखा शर्मा, वीणा बैद, प्रेम भंसाली एवं कर्नाटक से पधारी महिला शक्ति तथा भारतीय महिला मंडल राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य लता जैन, सुधा नौलखा, मधु कटारिया, सरिता गोठी, बैंगलुरु के सभी मंडलों के पदाधिकारी गण उपस्थित थे।

कार्यक्रम के तृतीय सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने मंडल एवं मंडल से जुड़ी जानकारी बहनों को दी। कार्यक्रम में बैंगलुरु एवं कर्नाटक के विभिन्न क्षेत्रों से पधारी हुई लगभग ४०० बहनों ने भाग लिया। सुधा नौलखा ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन मंडल की मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने किया। कर्नाटक से पधारे हुए सभी पदाधिकारीगणों का सम्मान विजयनगर मंडल द्वारा किया गया।

✦ *ज्ञानवान व्यक्ति अनेक समस्याओं का समाधायक बन सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी को युगप्रधान अलंकरण के उपलक्ष्य में

● **साध्वी डॉ० गवेषणाश्री** ●

युगदृष्टा युगप्रधान, जन-जन को नव राह दिखाएँ।
षष्टीपूर्ति पर प्रभो! हम अरमान सफल बनाएँ।।

झूमर नेमानंदन दुगड़, कुल के उजियारे,
तेरापंथ धर्मसंघ के तुम हो भाग्य सितारे,
प्रभो! वीतराग कल्प! हममें वीतराग भाव सदा जगाएँ।।

मन मोहक तव मुद्रा, दिल में अनवरत करुणा भाव बहाएँ,
श्रम शम सम की उच्च साधना से, संयम को संपोषण दे पाएँ,
कषाय विजयी बने हम, आत्मस्वरूप को पहचान पाएँ।।

ज्योतिर्मय तव जीवनशैली, जन-जन के मन को लुभाएँ,
तेरी आकर्षक प्रवचनशैली, व्याप्त अज्ञान तिमिर को मिटाएँ,
हे शांतिदूत! जग को अमिट शांति का संदेश सुनाएँ।।

विजयी अहिंसा यात्रा का हम करते अभिनंदन,
संघ सिरताज संघ शिरोमणि साध्वी समाज का लो अभिवंदन,
गुणरत्नाकर, संघप्रभाकर, तव छत्रछाँह में मंजिल हम पाएँ।।

धर कूंजा धर मजला चलकर कितने भक्तों को तारा,
सद्भाव, नैतिकता का पाठ पढ़ाकर, जन मानस को बदला,
हे धर्मदूत! युगों-युगों तक राज करो, नित नूतन प्रेरणा पाएँ।।

आचार्यश्री तुलसी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में नि:शुल्क शिविर का आगाज

राजाजीनगर।

आचार्यश्री तुलसी की २६वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम् के तत्त्वावधान में १३ दिवसीय २६ नि:शुल्क शिविर का आगाज हुआ। प्रथम शिविर मारियापनपाल्या स्थित गायत्री पार्क में नि:शुल्क मधुमेह शिविर एवं दूसरा शिविर श्रीरामपुरम् सेंटर में दंत परीक्षण का आयोजन किया गया। कुल ७३ सदस्यों ने इस शिविर का लाभ लिया।

शिविर के प्रायोजक के रूप में मुकेश चंद्रेश मांडोत ने अपनी स्वीकृति प्रदान की। इस आयोजन को सफल बनाने में एटीडीसी स्टॉफ का अथक श्रम रहा। शिविर को व्यवस्थित आयोजन करने में तेयुप संस्थापक अध्यक्ष एवं एटीडीसी के संयोजक सुनील बाफना, कमलेश चोरड़िया, सुनील मेहता एवं राजेश देरासरिया ने अपनी सेवाएँ प्रदान की।

शांति के लिए संसाधनों की नहीं अपितु...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

योग-ध्यान, अध्यात्म ऐसे तत्त्व हैं, जिससे चेतना की निर्मलता रह सकती है। आत्मा शुद्ध रह सकती है। अणुव्रत-प्रेक्षाध्यान अध्यात्म की साधना के प्रकल्प हैं। जप-स्वाध्याय से भी मन एकाग्र रहता है, चित्त की निर्मलता रहती है। इन सबसे आदमी शांति के दरिये में बह सकता है। त्यागी संतों की वाणी से भी प्रेरणा मिल सकती है। वे पथदर्शन देकर मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं, आदमी की दशा और दिशा बदल सकती है।

त्यागमूर्ति, क्षमामूर्ति, समतामूर्ति संतों का समागम होना, उनकी वाणी सुनना अच्छी बात है। गृहस्थ के जीवन में भी त्याग का जितना हो सके प्रयोग करना चाहिए। दिनचर्या में कुछ समय साधना में लगाने का प्रयास होना चाहिए।

भारत का भाग्य है कि यहाँ अतीत में भी संत हुए हैं और वर्तमान में भी हो रहे हैं। प्राचीन ग्रंथ भी भारत के पास बहुत हैं। यहाँ अनेक धार्मिक पंथ भी हैं। भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता भी चाहिए। देश में नैतिकता और आध्यात्मिकता का भी विकास हो। आर्थिक और शैक्षिक विकास भी चाहिए। अध्यात्म भारत की विशेष संपत्ति है। साधना प्राप्ति के लिए शांति का विकास हो।

आज हंसराज डागा के रिसोर्ट में आए हैं। यहाँ कोई ध्यान-योग करना चाहे तो अच्छा आनुकुल्य रह सकता है। इनके परिवार में खूब धार्मिक संस्कार हों। अच्छी सेवा करते रहें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में हंसराज डागा, रजनी नाहटा, शारदा डागा, धमेन्द्र डागलिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। परमपावन ने महत्ती कृपा कर फरमाया कि छापर चातुर्मास के बाद बायतू जाने से पूर्व आचार्य भिक्षु समाधि संस्थान, सिरियारी में जाने का भाव है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हमें हंस वृत्ति अपनानी चाहिए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जून - 3 जुलाई, 2022

✦ *व्यक्ति का ज्ञान, व्यवहार व कार्य उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। व्यक्ति अपने भीतर के सौंदर्य को निखारने का प्रयत्न करे और सद्गुणों को वृद्धिंगत करे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

कार्यशाला में सिखाए आत्मरक्षा के गुर

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित 'Divas in Defence' प्रोजेक्ट का आगाज तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में कन्या मंडल ने किया। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण कन्या मंडल की प्रेक्षा सुराणा, आर्या संचेती, चेतना संचेती ने किया। अध्यक्षा लता बाफना ने सभी का स्वागत करते हुए हुए कहा कि हम अपनी आत्म-सुरक्षा के लिए सभी डिफेंस के गुर अवश्य जानें और उसका सही प्रशिक्षण प्राप्त करें।

इस कार्यशाला के प्रशिक्षक के रूप में ट्रेनर योगेश पोरवाल एवं उनकी टीम ने बहुत ही सरल एवं सुंदर तरीके से प्रशिक्षण दिया। कन्या मंडल की कन्याओं ने, किशोर मंडल, ज्ञानशाला के बच्चों ने आत्म-सुरक्षा के ट्रिक्स को प्रैक्टिकल किया।

इस उपयोगी कार्यशाला में कन्या मंडल, किशोर मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चे सम्मिलित हुए। संस्थापक अध्यक्ष कंचन छाजेड़, मंत्री सीमा छाजेड़, सहमंत्री वंदना भंसाली एवं महिला मंडल की बहनें कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम को आयोजित करने में कन्या मंडल प्रभारी सुधा दुगड़ एवं सह-प्रभारी पूनम दुगड़ का सहयोग रहा।

रूपांतरण शिल्पशाला का आयोजन

उधना।

अभातेममं के निर्देशानुसार महिला मंडल के तत्त्वावधान में रूपांतरण शिल्पशाला 'संयम-एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध' कार्यशाला का आयोजन समणी हंसप्रज्ञा जी, समणी हर्षप्रज्ञा जी के सान्निध्य में आयोजित हुई। समणी हंसप्रज्ञा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से शुरुआत हुई। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। अध्यक्षा जस्सु बाफना ने सभी का स्वागत किया। समणी हर्षप्रज्ञा जी ने कहा कि छोटे-छोटे नियम लेकर हमें आगे बढ़ना चाहिए। चार कषाय—क्रोध, मान, माया, लोभ इससे हम कैसे इंद्रियों के द्वारा संयम करें। महिला मंडल की बहनों ने सुंदर गीतिका प्रस्तुत की।

समणी हंसप्रज्ञा जी ने कहा कि युद्ध दो तरह का होता है—बाहरी युद्ध, भीतरी युद्ध। हमें भीतरी युद्ध करना चाहिए जो अपने कषाय से युद्ध करता है सही में अपनी आत्मा से युद्ध करता है। वही सही युद्ध है। संयम का जीवन जीते हुए जीवन सुखमय बनाएँ।

महिला मंडल की बहनों के द्वारा गीतिका का संगान हुआ। कार्यशाला में महिला मंडल के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साहित्य प्रभारी ललिता चोरड़िया ने किया। आभार कन्या मंडल प्रभारी नीलम डांगी ने किया।

रूपांतरण एक्सप्रेस कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा साध्वी उर्मिलाकुमारी जी व साध्वी रतिप्रभाजी के सान्निध्य में महिला मंडल अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में रूपांतरण एक्सप्रेस 'शांति' बोगी के साथ पहुँच चुकी है 'संयम' 'एक युद्ध स्वयं के साथ' स्टेशन पर। कार्यशाला का शुभारंभ त्रिपदी वंदना से किया गया। प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। उपाध्यक्ष अरुणा डोसी ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की जानकारी दी।

साध्वी रतिप्रभाजी ने कहा कि हर जीव के पास पाँच इंद्रियाँ व मन होता है। पाँच स्थावर के एक स्पर्शन इंद्रियाँ होती है, लेकिन उनको भी पाँच इंद्रियाँ वाले जैसी ही पीड़ा होती है। उनके कर्मों के कारण वह अपनी पीड़ा प्रकट करने में असमर्थ हैं। साध्वी उर्मिला कुमारी जी ने कहा कि इंद्रियों का संयम क्या है? कैसे करना चाहिए? संयम इंसान का बेहतरीन गुण है। जो व्यक्ति संयम नहीं रखता उसको निर्णय, उसकी इच्छाएँ बदलती रहती हैं और परीक्षा की घड़ी में निर्बल साबित होता है। जो संयमी होगा वो सम्यग् दर्शन को प्राप्त करेगा। निर्वाण को प्राप्त कर सकता है।

सभी अपने जीवन में मन, वचन और काया को संयमित करो और शांति का वरण करो। संयम ही सम्यक्त्व का बोध भाव है। अध्यक्ष सोहनीदेवी सालेचा ने सभी का आभार ज्ञापन किया। आचार्य तुलसी लेख प्रतियोगिता की सूचना व नियम भी बताए। उपासिका लीलादेवी सालेचा ने कार्यशाला का संचालन किया। बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही।

साध्वीप्रमुखाश्री वर्धापना समारोह

शांतिनगर, बैंगलोर।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में महिला मंडल राजराजेश्वरी नगर एवं शांतिनगर श्रावक समाज के तत्त्वावधान में नव मनोनीत नव साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी का वर्धापन समारोह नरेंद्र सुराणा के निवास स्थान पर आयोजित किया गया। सर्वप्रथम ममता घोषल, कांता सेठिया, पिंकी घोषल, सरिता बरड़िया ने मंगलाचरण किया।

महिला मंडल राजराजेश्वरी नगर अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। महिला मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा सामुहिक गीत का संगान किया गया। प्रमुखाश्री जी के जीवन का परिचय कविता के माध्यम से जितेंद्र घोषल ने दिया।

साध्वी शिवमाला जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने नवमी साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का चयन किया, जिससे चतुर्विध धर्मसंघ में आह्लाद की अनुभूति हुई गुरु शिष्य को तैयार कर संघ में सर्वोपरि स्थान पर प्रतिष्ठित करते हैं। साध्वी अमितरेखाजी, साध्वी अर्हमप्रभाजी, साध्वी रत्नप्रभाजी ने गीतिका द्वारा अभिवंदना की। साध्वी रत्नप्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी अमित रेखाजी ने किया। आभार ज्ञापन राजराजेश्वरी नगर महिला मंडल मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, गांधीनगर के सहमंत्री राजेंद्र बैद, पारसमल धोका, चित्रा बाफना, रजनी संचेती, सरोज चोरड़िया, संगीता डागा, कन्या मंडल से चेतना संचेती सहित काफी संख्या में श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

संयम-एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध

बांद्रा।

साध्वी राकेश कुमारी जी के सान्निध्य में एवं तेममं, मुंबई की अध्यक्षा रचना हिरण, पदाधिकारी व गणमान्य श्रावक समाज की उपस्थिति में अभातेममं के निर्देशन में तेममं के तत्त्वावधान में तेममं, बांद्रा द्वारा आयोजित 'संयम - एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध' तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। स्वागत तेममं की संयोजिका भारती धाकड़ द्वारा किया गया।

साध्वी मलयविभाजी ने प्रेक्षाध्यान द्वारा किस तरह स्वयं के इंद्रियों को कंट्रोल करें। साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि हमें हमारी पाँच इंद्रियों पर कंट्रोल रखना चाहिए।

तेममं, मुंबई की अध्यक्षा रचना हिरण ने कहा कि संयम हमारे जीवन में बहुत ही जरूरी है, अगर हमने जीवन में संयम को उतार लिया तो जीवन सुखद और आनंदमय बन जाएगा।

कार्यक्रम में जैन भिक्षु फाउंडेशन के महामंत्री मुकेश नौलखा, तेयुप अध्यक्ष प्रशांत परमार, अभातेयुप, किशोर मंडल राष्ट्रीय सह-प्रभारी मयंक धाकड़, बाबूलाल बोहरा ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी विपुलयशाजी द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन तेममं, बांद्रा की सह-संयोजिका कविता चपलोत द्वारा किया गया।

विसर्जन दिवस

उधना।

अभातेममं के निर्देशन में उधना महिला मंडल ने विसर्जन दिवस को केंद्र द्वारा निर्देशित लेख, द्रष्यांक, अभिनव अंत्याक्षरी का आयोजन साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में पांडेसरा तेरापंथ भवन में किया गया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। ज्ञानशाला के बच्चों ने तुलसी अष्टकम व महिला मंडल की २६ बहनों द्वारा मंगलाचरण हुआ।

अध्यक्षा जसु बाफना ने सभी का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, परिषद मंत्री उत्कर्ष खाब्या, अभातेममं से गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना, पांडसेरा श्रावक समाज से सुरेश बाबेल, सभा उपाध्यक्ष मुकेश बाबेल सभी ने शुभकामनाएँ दी।

साध्वी आराधनाश्री जी, साध्वी जिज्ञासा प्रभा जी ने अपने जीवन का संस्मरण कविता के माध्यम से सुनाया। साध्वी आलोकप्रभाजी ने वक्तव्य दिया। साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने अपने गुरु कालूगणी के विश्वास को जीता, गुरु निष्ठा आचार्यश्री तुलसी में देखने को मिलती है।

कार्यक्रम में महासभा से लक्ष्मीलाल बाफना, परिषद अध्यक्ष सुनिल चंडालिया, महिला मंडल के पदाधिकारी एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अंताक्षरी—समणी हंसप्रज्ञा जी व समणी हर्षप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आयोजित की गई। अंत्याक्षरी में मंडल की लगभग ५० बहनों ने भाग लिया। लेख प्रतियोगिता में १० लेख प्राप्त हुए। जिसमें प्रथम सीमा डांगी, द्वितीय सीमा रांका एवं तृतीय अर्जुन लाल मेडतवाल रहे। सभी को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन सुनिता कुकड़ा, कन्या मंडल प्रभारी नीलम डांगी, दीप्ति डांगी रही। संचालन मंत्री सुनीता चोरड़िया ने किया तथा आभार ज्ञापन दीप्ति डांगी ने किया।

दीक्षार्थी का मंगलभावना समारोह

कटक, उड़ीसा।

मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी व मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी मुमुक्षु रोशनी लुणिया का मंगलभावना समारोह तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में महेश्वरी भवन में आयोजित हुआ।

मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि संयम जीवन ग्रहण करना हर व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। विचार जब संकल्प बन जाता है तब व्यक्ति लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ जाता है।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि तीन प्रकार की आँखें होती हैं—चमड़े, बुद्धि व हृदय की। जब चमड़े की आँख खुलती है तब उठना कहते हैं, जब बुद्धि की आँख खुलती है तब समझना कहते हैं। और जब हृदय की आँख खुलती है तब जगना कहते हैं। जगने का नाम है—दीक्षा। दीक्षार्थी रोशनी लुणिया गुरु चरणों में समर्पित साधना के पथ पर आगे बढ़ती रहे।

मुनि डॉ० विमलेश कुमार जी ने कहा कि संसार को मन से पकड़ना बंधन व छोड़ देना मुक्ति है। भीतर के अहम को समर्पित कर देना दीक्षा है। मुनि पदमकुमार जी ने कहा जो शूरवीर होते हैं वे ही दीक्षा ग्रहण करते हैं। बालमुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत के माध्यम से मंगलाचरण प्रस्तुत किया। दीक्षार्थी रोशनी लुणिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—मनुष्य जन्म मूल्यवान है, उसे व्यर्थ न खोकर संयम ग्रहण करना चाहिए। मुमुक्षु कीर्ति बुच्चा ने भी विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी, तेयुप के मंत्री मनीष सेठिया, तेमममं की अध्यक्षा हीरादेवी बैद, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल, भुवनेश्वर सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, तेरापंथ भवन ट्रस्ट के अध्यक्ष हीरालाल खटेड़, मंगलचंद चौपड़ा, शिल्पा सुराणा, अंकिता बांठिया, अशोक नाहटा, प्रकाश सुराणा ने मंगलभावना करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। दीक्षार्थी का परिचय राजकुमार बांठिया ने प्रस्तुत किया। तेममं, ललिता बांठिया आदि पारिवारिक महिलाओं ने मंगलभावना गीत प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री चैनराज चोरड़िया व अमरचंद बैंगानी ने दिया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। दीक्षार्थी बहन व परिजनों का सम्मान किया गया। मंगलभावना समारोह से पहले दीक्षार्थी रोशनी लुणिया की शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें बड़ी संख्या में तेरापंथ जैन समाज के लोगों ने हिस्सा लिया।

आचार्यश्री तुलसी के २६वें महाप्रयाण दिवस के आयोजन

आचार्यश्री तुलसी के अवदान बने रहें वरदान

विशाखापट्टनम्

विशाखापट्टनम के ललिता नगर स्थित कोठारी भवन में तेरापंथ के नवम आचार्यश्री तुलसी का २६वां महाप्रयाण दिवस का आयोजन तेरापंथी सभा की ओर से मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में हुआ।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी जन-जन की श्रद्धा के केंद्र थे। वे जन-जन के हृदय में बसे हुए हैं। वे यौवन की उदय अवस्था में तेरापंथ के आचार्य बने। उन्होंने धर्मसंघ का सर्वांगीण विकास किया। आज उनके अवदान तो वरदान बन रहे हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने तीन महत्त्वपूर्ण रत्न संघ को दिए। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, आचार्यश्री महाश्रमण जी और साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी। आज हम आचार्यश्री महाश्रमण जी में आचार्यश्री तुलसी के दर्शन कर रहे हैं, बालमुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी तेरापंथ के विलक्षण आचार्य थे। बालमुनि ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण से किया।

महासभा प्रभारी विमल कुंडलिया, सभा अध्यक्ष चंपालाल डूंगरवाल, महिला मंडल अध्यक्षा वंदना विनायकिया आदि ने विचारों के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। महिला मंडल की बहनों ने 'महाप्राण गुरुदेव' गीत का संगान किया। संचालन संदीप सेठिया ने किया।

आचार्यश्री तुलसी के कार्यों को शताब्दियों तक याद रखेंगे

बरेटा मंडी, मानसा।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी एक ज्योतिपुंज आचार्य थे। मात्र २२ वर्ष की अवस्था में आचार्य बनकर उन्होंने संघ को जो ऊँचाइयाँ प्रदान की उसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। जो आज हमें धर्मसंघ में चहूँमुखी विकास नजर आ रहा है, उसकी शुभ शुरुआत करने वाले आचार्यश्री तुलसी ही थे। तेरापंथ धर्मसंघ में साहित्य का जो विस्तार देख रहे हैं, चाहे आगम साहित्य हो चाहे अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान या नाना विषयों पर गद्य-पद्यमय प्रचुर साहित्य है वह सब आचार्यश्री तुलसी की ही देन है। विज्ञप्ति, तेरापंथ टाइम्स, अणुव्रत पत्रिका, प्रेक्षाध्यान पत्रिका, युवादृष्टि आदि पत्र-पत्रिकाएँ जो देश-विदेश में घर-घर पहुँच रही हैं, जिससे समाज और संघ में चलने वाली गतिविधियों को आसानी से समझने का अवसर मिलता है। ज्ञानशाला, किशोर मंडल, कन्या मंडल, युवक परिषद, महिला मंडल, अणुव्रत समिति आदि भी गुरुदेव के समय ही प्रारंभ हुई, जिससे समाज के हर वर्ग के लोग आसानी से जुड़ सकते हैं। जैन विश्व भारती, समण श्रेणी आदि भी गुरुदेव की ही देन है। साधु-साध्वियों को ही नहीं श्रावक-श्राविकाओं को भी हर दृष्टि से सक्षम और उपयोगी बनाया जो आज उपासक-उपासिका के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। गुरुदेव के अनेक आयामों को बता सकना आसान नहीं है। हर आयाम व्यक्ति को ज्ञानवान और प्राणवान बनाने वाला है। इस अवसर पर मुनि अमन कुमार जी, मुनि नमि कुमार जी, प्रवीण जैन, विनोद सुराणा, महिला मंडल एवं हेमंत जैन ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

आचार्यश्री तुलसी के २६वें महाप्रयाण दिवस पर

राजसमंद।

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी, मुनि प्रसन्न कुमार जी एवं मुनि धर्मेश कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती, राजसमंद में आचार्यश्री तुलसी के २६वें महाप्रयाण दिवस पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि रविंद्र कुमार जी ने कहा कि व्यापार में प्रामाणिक रहना, किसी वस्तु में मिलावट कर या नकली को असली बताकर व्यापार नहीं करना अणुव्रत का उद्देश्य है। मुनि प्रसन्न कुमार जी ने जाति, रंग, संप्रदाय, देश और भाषा का भेदभाव न रखते हुए मनुष्य मात्र को आत्मसंयम की प्रेरणा दी। मुनि धर्मेश कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन का उद्देश्य हिंसात्मक उपद्रवों एवं तोड़-फोड़मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लेना, धार्मिक सहिष्णुता का भाव रखना एवं मैत्री, एकता, शांति, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा रखना है। मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन एक त्याग व संयम का आंदोलन है। परमपूज्य अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाया।

कार्यक्रम में डॉ० मुनि विनोद कुमार जी, मुनि अजय प्रकाश जी, मुनि मोक्ष कुमार जी ने आचार्यश्री तुलसी के जीवन पर अपने विचार रखे। पूर्व न्यायाधीश डॉ० बसंतीलाल बाबेल, विकास परिषद सदस्य पदमचंद पटावरी, अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन, उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल, बोधिस्थल मंत्री मंजु बडोला, महिला मंडल अध्यक्षा डॉ० सीमा कावड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष डॉ० वीरेंद्र महात्मा, शिक्षाविद डॉ० राकेश तेलंग ने विचार रखे।

डॉ० नीना कावड़िया, लता मादरेचा ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ महिला मंडल, राजसमंद ने स्मृति गीत प्रस्तुत किया। मंगलाचरण जीनल डूंगरवाल ने किया। गणेश लाल कच्छारा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि अतुल कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री तुलसी की वार्षिक पुण्यतिथि

जीन्द।

तेरापंथ सभा भवन में तेरांपथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में आचार्यश्री तुलसी की वार्षिक पुण्यतिथि मनाई गई। कार्यक्रम का मंगलाचरण जीन्द तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष संदीप जैन ने भजन के माध्यम से किया। नरेश जैन, महिला मंडल अध्यक्ष उपासिका कांता मित्तल, सभा अध्यक्ष खजांची लाल जैन ने आचार्यश्री तुलसी के अवदानों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष गौरव जैन, राजेश जैन, तेरापंथ सभा मंत्री नारायण सिंह रोहिल्ला, डॉ० सुरेश जैन, सुकुमाल जैन, ओमपति गोयल, राज जैन, संतोष जैन आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल ने किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

विवाह संस्कार

दिल्ली।

उमराव सिंह डोसी सुजानगढ़ निवासी की सुपुत्री नेहा डोसी का विवाह संस्कार प्रकाश पारख चुरू निवासी, सूरत प्रवासी के सुपुत्र धर्मेश पारख के साथ संस्कारक सुभाष दुगड़, प्रकाश सुराणा, हेमराज राखेचा ने विवाह संस्कार मंगल मंत्रोच्चार सहित संपन्न करवाया।

संस्कारक हेमराज राखेचा ने सभी का तेयुप दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से डोसी व पारख परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

तेयुप छापर के मंत्री राहुल दुधोड़िया ने पधारे हुए सभी एवं संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं गणमान्य जन उपस्थित थे।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

दिल्ली।

सिद्धार्थ बांठिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ संस्कारक सुभाष दुगड़ व संस्कारक मनीष बरमेचा ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से बांठिया परिवार का आभार व्यक्त किया व बांठिया परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया।

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

विनीत श्रीमाल, दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन गीड़िया, विनीत मालू ने संपूर्ण विधि-विधान से संपन्न करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से श्रीमाल परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

मनोज चंदनमल बरड़िया के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक बाबूलाल चोपड़ा एवं प्रदीप बागरेचा ने मांगलिक मंत्रोच्चार विधि से संपादित किया। तेयुप अध्यक्ष ललित बेंगवानी ने बधाई देते हुए अपने भाव व्यक्त किए।

परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक की भेंट की गई। चंदनमल बरड़िया ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में कार्यसमिति सदस्य कुणाल चोरड़िया, मनोज सिंघी एवं हनुमान भूतोड़िया की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक प्रदीप बागरेचा ने किया।

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

संजय बरड़िया के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक बाबूलाल चोपड़ा, प्रकाश धींग एवं विकास पितलिया ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपादित करवाया।

तेयुप अध्यक्ष ललित बेंगवानी एवं विकास पितलिया ने बधाई दी। परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट दी गई। संदीप बरड़िया एवं नीतू विकास बैद ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक हनुमान भूतोड़िया ने किया।

पाणिग्रहण संस्कार

बालोतरा।

प्रेमलता धर्मपत्नी स्व० विजयराज कांकरिया के सुपुत्र सनी कांकरिया का शुभ पाणिग्रहण संस्कार गौतमचंद कोठारी की सुपुत्री भानु के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक गौतमचंद वैदमूथा और पुष्पराज कोठारी ने मंगल मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधिपूर्वक संपन्न करवाया।

दोनों परिवार ने संस्कारकों व उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप बालोतरा की ओर से दोनों परिवारों का आभार व्यक्त किया एवं मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जून - 3 जुलाई, 2022

✦ *आदमी को अहिंसा, संयम और तप में पुरुषार्थ करना चाहिए। इन तीनों में सम्यक् पुरुषार्थ करने वाला आदमी मोक्ष की दिशा में गतिमान हो सकता है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

त्रिदिवसीय ज्ञानशाला चारित्र निर्माण संस्कार शिविर का समापन

गांधीनगर।

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय चारित्र निर्माण शिविर का समापन किया गया। लगभग २०० बालक-बालिकाओं ने इसमें भाग लिया। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि चारित्र का निर्माण संस्कारों पर निर्भर है। ज्ञानशाला सद्-संस्कारों की जननी है। बचपन तथा शैशव श्वेत पत्र के समान है, जिस पर जैसा चाहे लिखा जा सकता है, जैसा चाहे रंग भरा जा सकता है। ज्ञानशाला आध्यात्मिक संस्कारों के बीजारोपण के लिए एक ऐसा महान उपक्रम संपन्न पाठ्यक्रम है जिसमें बालक-बालिकाओं में धर्म देव, धर्म गुरु के प्रति श्रद्धा भाव जागृत होते हैं।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि वर्तमान का समय युग परिवर्तन का समय है इस बदलते परिवेश में निर्माण जरूरी है, जिनके पास दिशा सही होती है वह हमेशा सही बोध प्राप्त करता है, किशोर-किशोरियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आपका चरित्र ही आपका व्यक्तित्व है। साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्री जी ने मधुर गीत प्रस्तुत किया। शिविर में ज्ञानशाला संयोजक जुगराज श्रीश्रीमाल, हेमंत छाजेड़, प्रशिक्षिकाएँ, पारसमल नाहर, राजेश कोठारी, समता गीड़िया, संगीता चंडालिया, संगीता सिसोदिया एवं प्रभा सेठिया आदि ने प्रशिक्षण दिया।

शिविर समापन समारोह में तेरापंथ अध्यक्ष सुशेश दक, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सरस्वती बाफना, जुगराज श्रीश्रीमाल, पारसमल नाहर ने शिविर में संभागी बने सभी सदस्यों के शुभ भविष्य की मंगलकामना की।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने गांधीनगर तेरापंथ में २६ मई से प्रारंभ होने वाली ज्ञानशाला में जैन विद्या व शिशु संस्कार बोध अध्ययन के लिए बालक-बालिकाओं को व उनके अभिभावकों को प्रेरणा दी। आभार ज्ञापन किरण सेठिया ने किया। ज्ञानशाला सह-संयोजक गौतम डोसी ने तीनों दिन कार्यक्रम का व शिविर व्यवस्था का संचालन किया। कन्याओं ने क्विज अंत्याक्षरी स्क्रिप्ट आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किए। मंगली देवी दुधेड़िया एंड संस शिविर के प्रायोजक रहे। गांधीनगर के पितलिया एवं सिसोदिया परिवार के द्वारा सभी बच्चों को पारितोषिक वितरित किया गया।

पंच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

साउथ कोलकाता।

साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में संस्था शिरोमणी महासभा के तत्त्वावधन में, साउथ कोलकाता सभा की आयोजना में पंच दिवसीय पूर्वोत्तर-भारत संस्कार निर्माण शिविर लगाया गया। शिविर में ६५ कन्याओं ने उत्साह के साथ भाग लिया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि संस्कारों के बीजारोपण का माध्यम बनता है–शिविर। जहाँ थोड़े ही समय में गुरुवाणी का आस्वाद लेकर शिक्षाओं का गुलदस्ता हाथ में आ जाता हैं जीवन को शिष्टता के महासमुद्र में गोते लगाने वाला शिविर संस्कारों की विशिष्टता प्रदान करता है तथा दृढ़-संकल्पों की प्रतिष्ठा तक पहुँचा देती है, इसके लिए आवश्यक है विनय एवं विवेक के साथ विद्या को ग्रहण करें। पाँच दिवसीय शिविर में साध्वी स्वस्तिकाश्रीजी, साध्वी सुधांशुप्रभाजी, साध्वी गौतमयशाजी के साथ अनेकानेक प्रशिक्षकों ने प्रशिक्षण दिया।

विक्रम सेठिया, संयोग पारख, मुमुक्षु संजना, मुमुक्षु अंकिता, मुमुक्षु रोशनी, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका प्रेमलता चोरड़िया, डॉ० पुखराज सेठिया, वीणा श्यामसुखा, जयश्री डागा, सुधा बैंगानी, पूजा बोथरा, विनीता दुगड़, शिविर संयोजक रवि छाजेड़, संस्कारक महावीर दुगड़, रश्मि सुराणा, शशि दुगड़ का विशेष सहयोग रहा। समाज भूषण बिशनदयाल कैलाशचंद गोयल परिवार से अभिषेक गोयल के प्रायोजकत्व में तथा रवि छाजेड़ के संयोजकत्व में कार्यक्रम सुचारु रूप से चला।

मुख्य कार्यक्रम में साउथ कोलकाता सभाध्यक्ष बाबूलाल बोथरा, निधि गोयल, महासभा मुख्य न्यासी सुरेश चंद गोयल सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपने विचार वक्तव्य, गीत के माध्यम से व्यक्त किए। साउथ कोलकाता सभा के मंत्री खेमचंद रामपुरिया ने आभार व्यक्त किया। शिविरार्थियों में श्रेष्ठ शिविरार्थी–गरिमा सेठिया, अनुशासित शिविरार्थी-प्रेक्षा पोरवाल, संस्कारी शिविरार्थी-हर्षिका छल्लाणी, हेमलता सामसुखा, ईशा जैन, सिद्धि जैन, एक्टिव शिविरार्थी-प्रिया बोथरा को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ शिविरार्थी कन्याओं के मंगल संगान से हुआ तथा संचालन शैलेंद्र बोरड़ ने किया।

संतों का आध्यात्मिक मिलन

राजाराजेश्वरी नगर।

मुनि अर्हत कुमार जी एवं मुनि रश्मि कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन राजाराजेश्वरी नगर में विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में हुआ। तेरापंथ भवन से आर०आर० नगर आर्च तक मुनि अर्हत् कुमार जी श्रावक समाज के साथ पहुँचे वहाँ मुनि रश्मि कुमार जी के पहुँचते ही संतों के मिलन ने वात्सल्य एवं सम्मान के अद्भुत संगम की अनुभूति करवाई। वहाँ से विशाल जुलूस के साथ तेरापंथ भवन में संतों का पदार्पण हुआ। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंडल की बहनों ने सुमधुर मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अध्यक्ष मनोज डागा ने पूरे श्रावक समाज की ओर से संतों का अभिनंदन किया।

मुनि भरत कुमार जी ने मिलन शब्द को विश्लेषित करते हुए कहा कि ऐसा मिलन जीवन में आ जाए तो घर स्वर्ग बन जाए। प्रियांशु मुनि ने भी अपने विचार रखे। मुनि जयदीपकुमार जी ने कहा कि दो सिंघाड़ों का मिलन हमारे संघ की गरिमा है। संतों की मिलनसरिता एवं प्रमोद भावना श्रावकों के लिए उदाहरण है। मुनि अर्हत कुमार जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मुनि रश्मि कुमार जी भीलवाड़ा से ३००० किलोमीटर की यात्रा करके यहाँ पधारे। मुनि रश्मि कुमारजी ने इसे गुरुकृपा का प्रसाद बताया तथा गीतिका के द्वारा अपने भावों को व्यक्त किया।

संस्थापक अध्यक्ष कमल दुगड़, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, तेमम अध्यक्ष लता बाफना, गांधीनगर अध्यक्ष सुरेश दक, विजयनगर के अध्यक्ष राजेश चावत, अभातेमम से वीणा बैद, मधु कटारिया, तेमम विजयनगर के अध्यक्ष प्रेम भंसाली, टीपीएफ अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मालू एवं अनेक गणमान्य लोगों ने भावाभिव्यक्ति दी। विजयनगर महिला मंडल ने अभातेमम द्वारा संयोजित इम्पैक्ट ३६० के लोगों का अनावरण मुनिगण के सान्निध्य में किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि विक्रम महेर ने किया। आभार गुलाब बांठिया ने व्यक्त किया।

Who is Sadhvi Pramukha Vishrut Vibhaji ?

● Muni Vardhman ●

S - Soft Hearted Person
A - Art of Acharya Mahapragyaji
D - Dedicated always at Guru's will
H - Humbleness Unbelievable
V - Virtuous
I - Intuition Super Awesome
P - Prodigious
R - Renowned Personality
A - Angelic
M - Multi-Talented
U - Unique Wisdom
K - Kind Ascetic
H - Height of Divine
A - Admirable Aura

V - Very Simple & Down to Earth
I - Intellectual
S - Super Natural Humanbeing
H - Honest Person
R - Radiant
U - Uncommon Nun
T - Tolerance Power Extra-Ordinary
V - Versatile Mind
I - Inspiring Nature
B - Brilliant
H - Honourable
A - Always Cheerful
J - Just Like a Mother
I - Idol for Everyone....

I Wish for You –

- All the joys your heart can hold.
- All the smiles a day can bring.
- All the blessings life can unfold. May You have God best in everything!!!

'परिवार के साथ कैसे रहें' विषय पर कार्यशाला का आयोजन

किलपॉक, चेन्नई।

मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में कुबेर हॉल किलपॉक में 'परिवार के साथ कैसे रहें' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनि सुधाकर जी ने कहा कि सात वार से भी बड़ा वार है–परिवार। जिस घर में माँ-बाप की शीतल छाँव होती है वह घर परिवार कहलाता है। परिवार में प्रेम, सौहार्द, अपनत्व, सामंजस्य, सहनशीलता और समन्वय का भाव होना चाहिए। परिवार की शांति जीवन की सफलता का महानतम सूत्र है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जीवन को कलापूर्ण और सफल बनाने के लिए विषमता में भी समता से जीना सीखना जरूरी है। परिवार और समाज में नाना प्रकार के स्वभाव और संस्कार के व्यक्ति होते हैं। उस स्थिति में समता और सामंजस्य का अभ्यास बहुत जरूरी होता है।

मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि घर में एक-दूसरे के प्रति विश्वास का भाव होना चाहिए, तर्क नहीं समर्पण होना चाहिए। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, माधवराम ट्रस्ट के मुख्य न्यासी घीसूलाल बोहरा, महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा हिरण एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी के साथ लगभग ४०० व्यक्ति उपस्थित थे। परमार परिवार की बहनों ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सुमधुर प्रस्तुति दी।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

कटक।

मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी व मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा व तेयुप, कटक की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह आयोजन रतनलाल सेठिया के निवास स्थान पर आयोजित हुआ। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया व मारवाड़ी समाज के गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि परिवर्तन सदा अपेक्षित रहता हैं मूल परंपरा को सुरक्षित रखते हुए किया गया परिवर्तन विकास का आधार बन सकता है। सभा व तेयुप की नई कार्यकारिणी का गठन परिवर्तन की स्वस्थ परंपरा का निर्वाह है। मुनिश्री ने सभा अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी व तेयुप अध्यक्ष भैरव दुगड़ के आगामी कार्यकाल की सफलता के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि पद ग्रहण एक व्यवस्था है। मूलतः सेवा करना ही दायित्व ग्रहण का धर्म है। नवमनोनीत सभा अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी, नवमनोनीत तेयुप अध्यक्ष भैरव दुगड़ व उनकी कार्यकारिणी के प्रति मंगलकामना व्यक्त करते हुए संघ सेवा की प्रेरणा प्रदान की। नवमनोनीत तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी को महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने शपथ ग्रहण करवाई। मोहनलाल सिंघी ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए उन्हें शपथ दिलाई और अपने विचार व्यक्त किए।

नवमनोनीत तेयुप अध्यक्ष भैरव दुगड़ को निवर्तमान अध्यक्ष योगेश सिंघी ने शपथ दिलाई। भैरव दुगड़ ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए उन्हें शपथ दिलाई और अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर वरिष्ठ श्रावक मंगलचंद चौपड़ा, उत्कल मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष सुरेश कमाणी, नंदगाँव गौशाला से कमल सिकरिया, मर्चेंट एसोसिएशन के मंत्री राजेश अग्रवाल, भुवनेश्वर सभा अध्यक्ष बच्छराज बेताला, कटक सभा पूर्व मंत्री मनोज दुगड़ आदि ने शुभकामनाएँ प्रदान की।

सभा के मंत्री चैनरूप चोरड़िया, उपाध्यक्ष हनुमानमल सिंघी, तेयुप मंत्री मनीष सेठिया ने आभार व्यक्त किया। संचालन मनोज दुगड़ ने किया। इस अवसर पर पूर्व पदाधिकारियों द्वारा नई टीम को दायित्व हस्तांतरण किया। इस अवसर पर जैन संस्कारक पानमल नाहटा, राजेंद्र लुणिया, मनीष सेठिया द्वारा जैन संस्कार विधि के द्वारा मंत्रोच्चार भी किया गया।

शपथ ग्रहण समारोह

दिल्ली।

अणुव्रत भवन में तेरापंथी सभा का आयोजन किया गया। तेरापंथी सभा, दक्षिण दिल्ली के नए अध्यक्ष के रूप में हीरालाल गेलड़ा चुने गए। उन्होंने अपने दो साल के कार्यकाल के लिए अपनी टीम का चयन कर उन्हें शपथ दिलाई।

साधु-संतों की सेवा करना, दक्षिण दिल्ली में सभा के लिए नए भवन का निर्माण करना और तेरापंथ समाज के लोगों को जोड़ना इन तीनों कार्यों की प्राथमिकता तय करते हुए हीरालाल गेलड़ा ने पूरे विश्व के सभी लोगों से सुख-शांति और सद्भावना से रहने की अपील की। कल्याण परिषद के संयोजक के०सी० जैन ने बधाई देते हुए दिल्ली के जैन समाज के लिए नए-नए उपयोग करने पर जोर दिया और समाज कल्याण की बात कही।

दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने बधाई देते हुए 'वात्सल्य पीठ' जो की शासमाता की अंतिम स्थली है के कार्य को तेजी से करने तथा ६००० जैन परिवारों को जोड़ने का काम करने में सहयोग का वादा किया। महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने साधु-संतों के सार-संभाल करने में हर तरह से मदद का भरोसा दिया।

इस अवसर पर सभा के मंत्री प्रमोद घोड़ावत, पूर्व अध्यक्ष संजय चोरड़िया, टीपीएफ के उत्तर क्षेत्र के अध्यक्ष श्रील लुंकड़, उपाध्यक्ष राजेश कुमार जैन, पुखराज सेठिया, कमल सेठिया, मिलापचंद गेलड़ा, सुशील डागा, प्रदीप खटेड़, प्रदीप बंसल, अशोक कोठारी, यश बरमेचा, अरुणा डूंगरवाल, प्रकाश डूंगरवाल, पूजा जैन, सुरजीत पुगलिया, सुशील जैन, डॉ० कांति और अंकित श्यामसुखा, स्वीटी जैन, नंदलाल जैन, प्रीति जैन, अंजना गेलड़ा आदि उपस्थित थे।

ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं की परिचय गोष्ठी का आयोजन

सिकंदराबाद।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी त्रिशला कुमारी के सान्निध्य में हिमायतनगर, डी०वी० कॉलोनी, अमीरपेट, आईडीपीएल, नरेडमेट, अत्तापुर, क्वाडीगुड़ा, कारखाना आदि ईकाई क्षेत्रों की प्रशिक्षिकाओं के साथ परिचय गोष्ठी का आयोजन किया गया। आंचलिक संयोजक अंजु बैद ने हैदराबाद में संचालित २० ज्ञानशालाओं की संक्षिप्त जानकारी दी। उपस्थित मुख्य प्रशिक्षिकाओं ने अपने-अपने क्षेत्र में ज्ञानार्थियों, प्रशिक्षिकाओं व विकास आदि की जानकारी दी। सहक्षेत्रीय संयोजक डिम्पल बैद ने ऑनलाइन प्रतिक्रमण कक्षा की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि बचपन के संस्कार जीवन की आधारशिला को मजबूत बनाते हैं। साध्वी कल्पयशाजी ने कहा कि संख्या के बजाय हमें गुणवत्ता पर अधिक ध्यान देना चाहिए। पंचवर्षीय कोर्स की संपन्नता के पश्चात भी अन्य गतिविधियों जैसे प्रतिक्रमण, जैन विद्या, तत्त्वज्ञान आदि के माध्यम से ज्ञानार्थियों को जोड़े रखें। इस अवसर पर दो नन्हीं ज्ञानार्थियों निहिरा बरड़िया व देवांशी दुगड़ के प्रतिक्रमण की प्रथम दो पाटियों का शुद्ध उच्चारण परिषद को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस गोष्ठी में क्षेत्रीय संयोजक सीमा दस्साणी, वरिष्ठ मुख्य प्रशिक्षक पुष्पा बरड़िया, व्यवस्था सहयोगी सुमन सेठिया, मुख्य प्रशिक्षक रेखा संकलेचा व सरिता नखत, मीडिया विभाग से सरोज लोढ़ा, मीनाक्षी सुराणा, हर्षलता दुधोड़िया, अंजु गोलछा, सरोज लुणिया आदि अनेक प्रशिक्षिकाएँ उपस्थित थीं।

दायित्व बोध कार्यशाला का आयोजन

बांद्रा।

साध्वी राकेश कुमारीजी आदि के सान्निध्य में एवं श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा, मुख्य अतिथि, विशेष पदाधिकारी एवं गणमान्य श्रावक समाज की उपस्थिति में तेयुप, बांद्रा का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया, तेयुप द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। तेयुप के नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रशांत परमार द्वारा वर्ष २०२२-२३ की कार्यकारिणी की घोषणा की और सभी को नियुक्ति पत्र भी दिया गया।

साध्वी मलयविभाजी ने नव निर्वाचित तेयुप टीम को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि तेयुप के कार्यकर्ता उत्साही व जागरूक हैं। श्रद्धा भक्ति से भीगे हुए हैं, कुछ कर गुजरने की लग्न भी है। नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रशांत, मंत्री मनीष, कोषाध्यक्ष महावीर और उनकी पूरी टीम के प्रति मंगलकामना करती हूँ।

साध्वी राकेश कुमारी जी ने युवाओं को ऊर्जा का अहसास कराते हुए कहा कि बांद्रा छोटा भले ही हो पर क्वालिटी है, अनेक अच्छे कार्यकर्ता हैं। बांद्रा के श्रावकों को चातुर्मास व्यवस्था समिति व तेरापंथ सभा, मुंबई में भी जोड़ा गया है। समारोह में विनोद बोहरा की उपस्थिति रही। साध्वीश्री जी ने दायित्व बोध पर विचार रखते हुए कहा कि दायित्व बोध को जागरूकता, नैतिकता, प्रमाणिकता और बखूबी से निभाने का प्रयास करना है।

विनोद बोहरा द्वारा तेयुप बांद्रा की वर्ष २०२२-२३ की नव निर्वाचित टीम को शपथ दिलाई। कार्यक्रम में जैन भिक्षु फाउंडेशन के अध्यक्ष मदनलाल चपलोत, महामंत्री मुकेश नौलखा, अभातेयुप से मयंक धाकड़ द्वारा अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन महावीर इंटोदिया ने किया और आभार मंत्री मनीष धोका द्वारा किया गया।

राहत सामग्री वितरित समारोह

नगाँव।

अणुव्रत समिति ने बाढ़ की विभीषिका झेल रहे नगाँव के ग्राम्य अंचल के लोगों में राहत सामग्री वितरित की। नगाँव के विधायक रूपक शर्मा ने अणुव्रत समिति के अध्यक्ष छतर सिंह जैन से बाढ़ से जूझ रहे लोगों की सहायता की अपील की। उनकी अपील पर अणुव्रत समिति ने जिले के पश्चिम जला, रंगथली आदर्शगाँव, जलाह बेबेजिया गाँव, पाखिमोरिया गाँव, रंथोली राजाभेटी गाँव में २५० परिवारों में राहत सामग्री वितरित की।

अणुव्रत समिति के सभी सदस्यों ने इस कार्य के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष छतर सिंह जैन, मोहन लाल नाहटा, सरदार देवेंद्र सिंह सहमी, लक्ष्मीपत चोरड़िया, इंदर बोथरा, नोरतन बोकड़िया, सूर्या शर्मा सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

समिति के सचिव संजय बोथरा ने भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। इस अवसर पर जितुमोनी बोरा, जिला पंचायत प्रेसिडेंट मृदुल फूलन बोरा, निपुल शर्मा, रिआजुल हक ने भी पूर्ण सहयोग दिया।

तेरापंथी सभा एवं तेयुप का शपथ ग्रहण समारोह

फरीदाबाद।

तेरापंथी सभा व तेरापंथ युवक परिषद, फरीदाबाद के नव मनोनीत अध्यक्ष का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन के प्रांगण में आयोजित हुआ। कार्यक्रम जैन संस्कार विधि के साथ समायोजित हुआ। संस्कारक सुशील डागा, जतन श्यामसुखा, भरत कुमार बेगवानी व राजेश जैन के मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

शपथ ग्रहण कार्यक्रम में नव मनोनीत सभा अध्यक्ष गुलाबचंद बैद को निवर्तमान अध्यक्ष रोशनलाल बोरड़ ने तथा तेयुप अध्यक्ष विवेक बैद को निवर्तमान अध्यक्ष राजेश जैन ने पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। नव मनोनीत अध्यक्षों व श्रावक समाज ने धारणापूर्वक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

तत्पश्चात सभा अध्यक्ष एवं तेयुप अध्यक्ष ने भी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी टीम की घोषणा की तथा सभी को शपथ ग्रहण करवाई।

शपथ ग्रहण समारोह में महासभा के सदस्य मन्नालाल बैद, कमल बैंगाणी, दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष गोविंद बाफना, उपाध्यक्ष सुभाष सेठिया, दक्षिण दिल्ली सभा अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा, अभातेयुप समिति सदस्य विकास चोरड़िया, लक्ष्मीपत लुणिया, पीसी जैन, बहादुरसिंह दुगड़, हनुमान प्रसाद कोठारी, महिला मंडल अध्यक्षा सुमंगला बोरड़, मंत्री चंदा दुगड़, कमला लुणिया, टीपीएफ अध्यक्ष विजय नाहटा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आईसी जैन सहित अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

श्रीडूंगरगढ़।

मालू भवन में सेवाकेंद्र व्यवस्थापिका साध्वी चरितार्थप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के कार्यकारी मंत्री अभिजीत पुगलिया ने तेयुप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रदीप पुगलिया को अध्यक्ष पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। उसके पश्चात अध्यक्ष प्रदीप पुगलिया ने सभी पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, अणुव्रत समिति, तेरापंथ किशोर मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल, ओसवाल पंचायत, श्रीडूंगरगढ़ श्रावक-श्राविका समाज के लोगों की उपस्थिति रही।

साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए शपथ के संकल्प सूत्रों में वर्णित देव, गुरु, धर्म के प्रति सम्यक् श्रद्धा, व्यसनमुक्त जीवन, शनिवार की सामायिक आदि की पालना करने की प्रेरणा देते हुए मंगलपाठ सुनाया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री सुमित बरड़िया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जून - 3 जुलाई, 2022

✦ *शिक्षानीति हो या राजनीति, सब नीतियों में अहिंसा, नैतिकता, मूल्यवत्ता का प्रभाव रहना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

नव मनोनीत साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के प्रति काव्योद्गार

अर्हम्

● **शासनश्री साध्वी मंजुप्रभा** ●

रूपाली भोर है आई, गण मे खुशहाली लाई।
साध्वीप्रमुखाश्री जी, झेलो सौ-सौ बार बधाई।।

चंदेरी की धवल चाँदनी, बन गई भिक्षु संघ मन भावनी।
चाली पूरव पुरवाई---गण में---।।

हुई घोषणा हिवड़ो ठरग्यो, अनमोलो ओ हीरो मिलग्यो।
दिल री कली कली विकसाई---।।

तुलसी गुरुवर संयम पायो, महाप्रज्ञ जी खूब बढ़ायो।
नेमासुत रिझवारी बकसाई---।।

गुरुदृष्टि इंगित आराधन, मान्यो आत्मा रो सुख साधन।
सजगता हरपल दिखलाई---।।

संपादन शैली अलबेली, ज्ञान ध्यान स्यूँ भर ली झोली।
त्याग वैराग्य तरुणाई---।।

श्रमणी संघ चरणां अनुगामी, करो इशारो नहीं हुवैला खामी।
गण सैनानी गुरु परछाई---।।

शासनमाता रो ओ आसन खूब दीपाओ बरसै आनंदघन।
गण आँगण में खुशियाँ छाई---।।

लय : ओ मेरे यार सुदामा---

अर्हम्

● **साध्वी मेरुप्रभा** ●

मधुर गीत गा रही है साध्वीप्रमुखा को आज बधाएँ।
साँसों की सरगम पे हर मन मधुर संगीत सुनाएँ।।

महाश्रमण ने सरजा साध्वीप्रमुखा व्यक्तित्व तुम्हारा,
संघ भाल पर उदित हुआ है अप्रतिम सितारा,
मन मोहक मन महकता गुलशन तुमसे सरसाएँ।

सम शम-श्रम की तरंगिणी में नहाकर तुम सम हम बन पाएँ,
विनय समर्पण की ज्योति से परम पुनित प्रभात हुआ है,
सहज सरल सात्विक आभा से नव इतिहास रचना है।

और नहीं कुछ चाह मन में श्रद्धा के ये सुमन चढ़ाऊँ,
भक्ति के भावों से पूरित मन के ये उद्गार सुनाऊँ,
सौम्य सुरम्य जीवन साध्वीप्रमुखा को आज बधाऊँ।

जीओ ज्योतिर्मय हर याम

● **साध्वी शंकुलता, साध्वी संचितयशा, साध्वी जाग्रतप्रभा, साध्वी रक्षितयशा** ●

सा	:	साधना रो स्वाद प्यारो।
ध्व	:	ध्वंस करणो है भवां रो।
वी	:	वीतरागी लक्ष्य थांरो।
प्र	:	प्रमत्तता नें दे किनारो।
मु	:	मुसीबतां नें द्यो जीकारो।
खा	:	खास है अनुरोध म्हारो।
वि	:	विनम्रता रा निर्मल अंबार।
श्रु	:	श्रुताभ्यास में पहलो नंबर।
त	:	तप की लय में लीन निरंतर।
वि	:	विरल गुणां रा थे हो धाम।
भा	:	भाव भर्‌यो म्हे करां प्रणाम।
जी	:	जीओ ज्योतिर्मय हर याम।।

आध्यात्मिक मिलन में उमड़ा जन सैलाब

गांधीनगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी, सहवर्तिनी शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने विहार कर शेषाद्रीपुरम लादूराम डूंगरवाल के निवास पर पहुँची जहाँ बैंगलुरु के उपनगर से मुनि अर्हत कुमार जी तथा मुनि रश्मि कुमार जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने परम प्रसन्नता के साथ कहा कि हमारी अत्यधिक उत्कंठा थी मुनि अर्हत कुमार जी एवं मुनि रश्मि कुमार जी से मिलन की हमारे इंतजार के क्षण संपन्न हुए। आप दोनों मुनिप्रवर की गण निष्ठा, श्रम निष्ठा एवं गुरु निष्ठा से हम सभी अति प्रसन्न हैं। हमारा विनय समर्पण के साथ परस्पर अनुशासन सौहार्द भाव सदा गतिमान रहे।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की विरासत है आध्यात्मिक मिलन। यह मिलन ऐतिहासिक बन जाता है जब हम एक-दूसरे के गुणानुवाद में इतने सराबोर हो जाते हैं, जिससे श्रावक समाज को भी नई प्रेरणा मिलती है। साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी एवं साध्वी चेलनाश्री जी ने मुनिवृंद के स्वागत में सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि आज हमें असीम आनंद की अनुभूति हो रही है कि आज दीक्षा में ज्येष्ठ साध्वीश्री हमें आशीर्वाद देने पधारी हैं। आप अनुभवी हैं, आपने पूरे भारत की यात्रा करके जैन शासन की प्रभावना की है। श्रावक समाज में आध्यात्मिक बीज अंकुरित किए हैं। मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि मैं युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने हमें बैंगलुरु चातुर्मास का आशीर्वाद दिया। आप सभी साध्वीवृंद से मिलकर हम हर्ष विभोर हैं। मुनि भरत कुमार जी, मुनि जयदीप कुमार जी और मुनि प्रियांशु कुमार जी ने भी प्रसन्नता व्यक्त की।

आध्यात्मिक मिलन में गांधीनगर सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष कमल दुगड़, तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेश दक, महासभा के प्रतिनिधि प्रकाश लोढ़ा, विजयनगर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, मंत्री मंगल कोचर, तेयुप गांधीनगर अध्यक्ष विनय बैद, टी-दासरहल्ली से सभा के पूर्व अध्यक्ष लादूलाल बाबेल, मंत्री कन्हैयालाल गांधी, लादूराम डूंगरवाल, कमल गादिया, बहादुर सेठिया, माणकचंद मूथा, बिमल भंसाली, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोकरणा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थिति थे।

दिव्य बोध युवा संस्कार कार्यशाला का आयोजन

भुज।

डॉ० मुनि पुलकित कुमार जी के पावन सान्निध्य में सकल जैन समाज के युवाओं को आह्वान करते हुए 'दिव्य बोध युवा संस्कार कार्यशाला' तेयुप एवं महिला मंडल, भुज के तत्त्वावधान में आयोजित हुई।

मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा कि युवाशक्ति किसी भी देश, समाज एवं परिवार का आधार स्तंभ होती है। युवाओं में जोश के साथ होश भी बढ़े इसलिए ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन महत्त्वपूर्ण बन जाता है।

मुनिश्री ने 'लाईफ मैनेजमेंट के आध्यात्मिक सूत्र' विषय पर कहा कि जीवन में आध्यात्मिक सूत्रों का विशेष महत्त्व होता है। अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह सिद्धांतों को अपनाकर दैनिक जीवन की अनेक समस्याओं को दूर किया जा सकता है। इस अवसर पर मुनि आदित्य कुमार जी ने परिवार में बच्चों के भीतर छिपे टैलेंट को कैसे खोजा जाए तथा संतों की आध्यात्मिक शक्ति से कैसे कनेक्ट बनें रहा जा सकता है इस पर वक्तव्य दिया।

मुनिश्री द्वारा महामंत्रोच्चार से कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया। महिला मंडल की तरफ से भारतीबेन शाह तथा युवक परिषद की तरफ से अध्यक्ष आशीष बाबरिया ने वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप संगठन मंत्री आदर्श संघवी ने किया। कार्यशाला में भुज के समस्त जैन समाज के युवाओं ने अच्छी संख्या में भाग लिया।

अभिवंदना समारोह

देशनोक।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के रासीसर से देशनोक विहार के दौरान तेयुप, गंगाशहर के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल ने १०८ किशोरों द्वारा 'ॐ के प्रतिरूप में त्रिपदी वंदना' करके गुरुदेव के मंगल विहार की सुखसाता पूछकर, आगामी विहार और गंगाशहर आगमन पर अभिवंदना व्यक्त की।

इस अवसर पर गंगाशहर किशोर मंडल प्रभारी चंचल चोपड़ा ने बताया कि संयोजक कुलदीप छाजेड़ की संयोजना में १०८ किशोरों द्वारा सामुहिक लोगस्स पाठ करके गुरु वंदना की गई। आचार्यप्रवर ने महती कृपा कर किशोरों को मंगल उद्बोधन प्रदान करवाया तथा कहा कि किशोरों को अपने जीवन में आध्यात्मिक विकास करने के लिए निरंतर अभ्यासरत रहना चाहिए।

गंगाशहर किशोर मंडल सह-संयोजक दीपेश बैद ने बताया कि कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़, मंत्री देवेंद्र डागा, भव्य संचेती, विनोद जैन, ऋषभ संचेती, जिनेश बैद, प्रद्युमन गोलछा, तरुण बैद, धनपत भंसाली, ऋषभ लालाणी, रोहित बैद, महावीर फलोदिया का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

पुण्याई से प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी अनुकूल बन जाती हैं

जसोल।

साध्वी रतिप्रभाजी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मदिवस, पट्टोत्सव, युगप्रधान पद पर प्रतिष्ठित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से की। महिला मंडल द्वारा महाश्रमण अष्टकम् से मंगलाचरण किया। साध्वी पवनयशाजी ने आचार्यश्री महाश्रमण को वंदन करते हुए गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा, सत्यवादिता, मेधावी, बहुश्रुत, शक्तिशाली, मुख पर मधुर मुस्कान जैसे अनेक गुणों के बारे में बताया।

साध्वी कलाप्रभा जी ने बताया कि साधना से ही संघ चलता है। सभी आचार्यों ने अपने खून-पसीने से इस संघ को संवारा है, सींचा है। अनुशासन में रहने वाला ही विकास करता है। साध्वी रतिप्रभाजी ने कहा कि प्रबल पुण्याई के प्रतिकूल परिस्थिति भी अनुकूल बन जाती है। इसी क्रम में महिला मंडल, तेममं संरक्षिका पुष्पादेवी बुरड़, उपासिका मोहनी देवी संकलेचा, महेंद्र आर० तातेड़ सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपने गुरु को मंगलभावना प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री माणकचंद संकलेचा ने किया।

तेरापंथी सभा एवं तेयुप का शपथ ग्रहण समारोह

विरार।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा एवं तेयुप, विरार का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से करवाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से की। महिला मंडल ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। सभा के प्रभारी निर्मल जैन एवं तेयुप के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। निर्मल जैन ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। साध्वी विनयप्रभाजी एवं साध्वी प्रतीक प्रभाजी ने गीतिका प्रस्तुत की।

सभा अध्यक्ष रमेश हिंगड़ ने सभी का स्वागत करते हुए विरार समाज से गुरुदेव के चतुर्मास का अधिक से अधिक लाभ लेने की अपील की। नवमनोनीत तेयुप अध्यक्ष हेमंत धाकड़ ने मुख्य अतिथि सहित सभी से सहयोग की अपील की और अभातेयुप के आगामी कार्यक्रम मेगा ब्लड डोनेशन में सभी से सहभागिता हेतु आह्वान किया।

अभातेममं महाराष्ट्र प्रभारी तरुणा बोहरा ने कार्यकर्ताओं से जिम्मेदारी लेने के लिए आगे आने की बात कही। साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि हम नैतिकता के साथ ही आगे बढ़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमें अपने अंदर विश्वास लाना है।

विधायक एवं लोकनेता हितेंद्र ठाकुर ने अपने विचार रखते हुए समाज के हर कार्य में सहयोग का भरोसा दिलाया।

तेयुप अध्यक्ष हेमंत धाकड़ ने अपनी नव मनोनीत कार्यकारिणी की घोषणा की। जिन्हें परिषद प्रभारी जितेंद्र परमार ने शपथ दिलाई। उसके बाद सभा अध्यक्ष रमेश हिंगड़ ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की। जिन्हें प्रभारी निर्मल जैन ने शपथ दिलाई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लोकनेता एवं स्थानीय विधायक हितेंद्र ठाकुर उपस्थित थे। साथ ही विशेष अतिथि पूर्व सभापति जीतूभाई शाह, पंकज ठाकुर, नयन जैन, सभा प्रभारी निर्मल जैन, परिषद प्रभारी अभातेयुप सदस्य जितेंद्र परमार, अभातेयुप किशोर मंडल राष्ट्रीय सहप्रभारी मयंक धाकड़, अणुव्रत समिति, मुंबई अध्यक्षा कंचन सोनी, अभातेममं महाराष्ट्र प्रभारी तरुणा बोहरा उपस्थित रहे।

सभा प्रभारी निर्मल जैन, विरार महिला मंडल संयोजिका हेमा सिंघवी, तेयुप विरार के प्रभारी जितेंद्र परमार, मयंक धाकड़, वसई सभा के अध्यक्ष प्रकाश संचेती, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा कंचन सोनी, भारत जैन, महामंडल के मीठालाल धाकड़, पूर्व नगरसेवक नयन जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

वसई, नालासोपारा, सफाले आदि क्षेत्रों के तेयुप, सभा, महिला मंडल पदाधिकारी व स्थानीय स्थानकवासी संघ व नवयुवक मंडल ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री अजयराज फुलफगर ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ सभा विजयनगर तेयुप की नव मनोनीत टीम का शपथ ग्रहण का आयोजन मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि द्वारा हुआ। संस्कारक की भूमिका में पूर्व अध्यक्ष एवं श्री संस्कारक राकेश दुधेड़िया, अभिषेक कावड़िया, परिषद प्रभारी तेजराज चोपड़ा, गौतम खाब्या, धीरज भदानी एवं देवांग बैद ने अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को संपन्न करवाया।

महासभा से दक्षिणांचल आंचलिक प्रभारी प्रकाश लोढ़ा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। इस अवसर पर सर्वप्रथम सभा निवर्तमान अध्यक्ष राजेश चावत ने नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश गांधी एवं परिषद निवर्तमान अध्यक्ष अमित दक ने नव मनोनीत अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा को अध्यक्ष पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात प्रकाश गांधी एवं श्रेयांस गोलछा ने अपने प्रबंध मंडल एवं कार्यसमिति की घोषणा की एवं सभी को शपथ दिलाई।

इस अवसर पर मुनिश्री ने मंगल आशीर्वाद देते हुए नव मनोनीत टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित की। एवं कहा कि हमें पूरी युवा शक्ति को संगठन में जोड़कर नए-नए कार्यों को संपादित करना है और आध्यात्मिकता की तरफ युवा शक्ति को ले जाना है।

अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने नवीन टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित की एवं अपने दायित्वों के प्रति सजग किया। अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने नव टीम को मंगलकामना प्रेषित करते हुए विजयनगर के गौरवशाली इतिहास को और नई ऊँचाइयाँ प्रदान करने की बात कही एवं दोनों अध्यक्षों के प्रति मंगलकामना प्रेषित की।

तेरापंथ सभा, गांधीनगर के कार्यकारी सदस्य सुरेश दक, कर्नाटक जैन कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष पुखराज मेहता, विजयनगर सभा के प्रभारी संजय बांठिया ने नवनिर्वाचित टीम को शुभकामनाएँ दी। संचालन निवर्तमान अध्यक्ष राजेश चावत एवं अमित दक ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

मैसूर।

डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने तेरापंथ युवक परिषद के शपथ ग्रहण कार्यक्रम में कहा कि मैसूर चंदन की नगरी है। आज संघ की सेवा का मौका मिला है, यह भार नहीं उपहार है। शांत, भारत, क्रांति और शांति का नाम है दायित्व। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि परिषद गुलदस्ता है और कार्यकर्ता उसके सुवासित फूल। सुवासित फूल ही परिषद को महका सकते हैं।

तेयुप का जैन विधि से शपथ ग्रहण का कार्यक्रम सभा भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर तेयुप के युवकों द्वारा मंगलाचरण हुआ। गांधीनगर, बैंगलोर के सभा अध्यक्ष बद्रीलाल पितलिया भी उपस्थित रहे। तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विक्रम पितलिया ने नवनिर्वाचित नव अध्यक्ष विकास गांधी मेहता को शपथ दिलाई व नव अध्यक्ष ने अपने नए मंत्री प्रमोद मुनोत के साथ पूरी कार्यकारिणी को शपथ दिलवाई और अपने विचार व्यक्त किए।

संचालन विक्रम पितलिया ने किया। आभार तेयुप के मंत्री प्रमोद मुनोत ने किया। विशिष्ट सहयोग महावीर देरासरिया, नेमीचंद बडौला, मुकेश गुगलिया, ललित मैहर व त्रिदिवसीय कार्यशाला कर रहे आलोक दुगड़ का सम्मान किया गया।

✦ *जहाँ अहिंसा होती है, संयम होता है, वहाँ पर्यावरण की सुरक्षा स्वतः हो सकती है। बिजली, पानी का अपव्यय नहीं करना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

विशिष्ट प्रतिभा

ईशु हिरावत

हावड़ा शिवपुर।

अपने स्वर्गीय पिता विजय सिंह सिंघी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हावड़ा शिवपुर निवासी, ३८ वर्षीया गृहिणी ईशु हिरावत ने 'मिसेज वर्ल्ड इंटरनेशनल-२०२२' प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। यह प्रतियोगिता बरखा नांगिया द्वारा संस्थापित संस्था 'ग्लैमर गुड़गाँव' द्वारा मुंबई के जे०डब्ल्यू० मैरियट होटल में आयोजित की गई थी। उन्नीस वर्ष के वैवाहिक जीवन में वे अत्यंत खुश हैं। उनके पति दीपक हिरावत तथा बेटी तमन्ना (१८) और बेटा आरव (१४) ने उन्हें इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस क्षेत्र में ईशु बिलकुल अनुभवहीन थीं पर दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर उन्होंने इस दिशा में प्रयास आरंभ किया। पाँच दिनों तक वे मुंबई में ही रहीं। प्रतियोगिता के कई राउंड हुए तथा ५-६-२०२२ को फाइनल राउंड के दिन उनकी मेहनत रंग लाई, उन्हें १०८ प्रतियोगियों में से 'सैकेंड रनर अप' घोषित किया गया।

मूल रूप से तारानगर, राजस्थान निवासी ईशु उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन गईं जो अपने सपनों को साकार करना चाहती हैं। उनका यह विचार है कि नारी को सर्वप्रथम अपने मन के बंधनों को तोड़ना होगा। पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति कर उन्होंने जैन समाज का नाम रोशन किया है। भविष्य में वे 'स्तन कैंसर' के विषय में जागरूकता फैलाकर समाज सेवा करना चाहती हैं।

अभ्यर्थना एवं वर्धापना कार्यक्रम

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय', साध्वी राकेश कुमारी जी एवं साध्वी प्रज्ञाश्रीजी के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण अभ्यर्थना एवं साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के वर्धापना का कार्यक्रम आयोजित हुआ। महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ स्थानीय तेमम ने मंगलाचरण से किया।

तेमम की संयोजिका भावना धाकड़, तेयुप के अध्यक्ष पूरण चपलोत, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, भायंदर तेरापंथ सभा के मंत्री दिनेश आच्छा, फाउंडेशन के मंत्री सुमेरमल सुराणा, महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के चेयरमैन एस०के० जैन, तेयुप ने गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से भाव प्रकट किए।

साध्वी विद्यावतीजी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जी ने विकास के नए-नए आयाम उद्घाटित कर विश्व को शांति, सौहार्द एवं प्रेम का संदेश दिया है।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति वर्धापना के स्वर मुखरित किए। साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जी एक कुशल प्रवचनकार एवं कुशल प्रशासक हैं।

साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य केंद्रित धर्मसंघ है। साध्वीप्रमुखा की नियुक्ति भी आचार्यश्री स्वयं कराते हैं। नौंवी प्रमुखा के पद विश्रुतविभाजी को प्रतिष्ठित कर एक नए इतिहास की रचना आचार्य महाश्रमण जी ने की है। साध्वी प्रियंवदा जी, साध्वी सरलप्रभाजी, साध्वी मलयविभाजी ने अभ्यर्थना एवं वर्धापना में उद्गार व्यक्त किए। साध्वी प्रेरणाश्री जी, साध्वी विनयप्रभाजी, साध्वी मृदुयशाजी एवं साध्वी ऋद्धियशाजी तथा साध्वी प्रतीकप्रभाजी ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन पर शब्दचित्र के माध्यम से प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में दक्षिण मुंबई के कई विशिष्ट पदाधिकारी उपस्थित थे। आभार ज्ञापन मीडिया प्रभारी नितेश धाकड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन दिनेश धाकड़ ने किया। कार्यक्रम से पूर्व साध्वी विद्यावतीजी एवं साध्वी राकेश कुमारी जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

विश्व पर्यावरण दिवस

कांदिवली।

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति, मुंबई के तत्त्वावधान में एवं अणुव्रत क्षेत्र कांदिवली द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ३२ पेड़ संरक्षण जाली के साथ स्वामी विवेकानंद स्कूल के पास कांदिवली वेस्ट में लगाए गए। इस कार्यक्रम के लिए संरक्षण जाली प्रकाश हिरन (संयोजक) कांदिवली, बोरीवली, दहिसर एवं ज्ञानमल भंडारी के सौजन्य द्वारा भेंट की गई।

इस कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, कांदिवली, कांदिवली क्षेत्रीय सह-संयोजक जयेश छाजेड़, बीएमसी अधिकारियों–दशरथ के घुले, सचिन एस पारखे, चैत्रा एफ मावची का विशेष सहयोग रहा।

✦ *आदमी को अपने जीवन में अपनी संपदा और सामर्थ्य का विकास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

तेयुप, साउथ हावड़ा ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाहन करते हुए बादामी देवी आश्रम के ३० बच्चों को फल एवं मिठाई वितरण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। उपाध्यक्ष मनीष बैद ने सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में सहमंत्री अमित बेगवानी, सहमंत्री राहुल दुगड़, संयोजक मनीष बैद सहित रोहित बैद, हर्ष बांठिया, अमित चोरड़िया एवं परिवार की उपस्थिति रही। प्रायोजक परिवार से नैना लुनावत ने परिषद के कार्यों की सराहना की और आभार जताया। प्रायोजक मनोज पंकज रितेश तेजश लुनावत का आभार। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार सामाजिक सेवा कार्य के पर्यवेक्षक अमित बेगवानी ने किया।

● अभातेयुप के त्रिआयाम सेवा-संस्कार-संगठन अंतर्गत तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा क्षेत्र के बनो जीवन आश्रम में सुबह का नाश्ता वितरण करते हुए सेवा कार्य किया।

कार्यक्रम का प्रारंभ परिषद ने सामुहिक मंगलाचरण के साथ किया। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया। आश्रम के लगभग १०० मानसिक विकलांग रोगियों में सुबह का नाश्ता, फल का वितरण परिषद के युवाओं द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा, सहमंत्री अमित बेगवानी, सामाजिक कार्य के संयोजक मनीष बैद, सहित अजीत दुगड़, सुनीत नाहटा, अभिषेक खटेड़, रोहित बैद की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार सामाजिक कार्यों के पर्यवेक्षक अमित बेगवानी ने किया।

● तेयुप द्वारा बच्चों के बीच में सेवा कार्य किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया। बादामी देवी के निकट की बस्ती के २०० बच्चों को सुबह का नाश्ता वितरण परिषद के युवाओं द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में मंत्री गगनदीप बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी, सहमंत्री राहुल दुगड़, संयोजक मनीष बैद, सह-संयोजक आदेश चोरड़िया, दीपक नखत आदि अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन संयोजक मनीष बेद ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

बैंगलुरु।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, आड़गुड़ी द्वारा पुलिस क्वार्टर्स में निःशुल्क हेल्थ चेकअप कैंप व रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

एटीडीसी आड़गुड़ी के प्रभारी सुरेश संचेती ने सभी का स्वागत करते हुए कैंप की व्यवस्था की जानकारी दी। नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर सभी ने अपनी-अपनी व्यवस्था संभाली। स्वस्थ भारत कैंप के अंतर्गत निःशुल्क ब्लड शुगर टेस्ट, डेंटल चेकअप, थायराइड चेकअप व फिजियोथेरेपी कंसल्टेशन का आयोजन किया गया। परिषद द्वारा रक्तदान संयोजक सुधीर पोकरना के दायित्व में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें लायंस ब्लड बैंक का सहयोग प्राप्त हुआ।

डेंटल विभाग से डॉ० कोमल, फिजियोथैरेपिस्ट डॉ० चेतन, लेब टेक्नीशियन अर्जुन व उषा एवं पंजीकरण में फोजिया का परिश्रम उल्लेखनीय था। अध्यक्ष विनय बैद, मंत्री प्रवीण बोहरा, सह-संयोजक जितेंद्र कोचर का संपूर्ण सहयोग रहा। पुलिस इंस्पेक्टर मंजुनाथ ने कैंप की व्यवस्था की सराहना करते हुए क्वार्टर्स में आगे भी परिषद द्वारा आयोजित कैंप में सहयोग प्रदान करने का आश्वास दिया। निर्भयत्व पुलिस कर्मी, उनके परिवार जन सहित कुल २७४ लाभार्थियों ने सेवा प्राप्त की। सभी के प्रति आभार ज्ञापन एटीडीसी संयोजक संदीप चोपड़ा ने किया।

अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

एटीडीसी पूर्वांचल के लिए यह गौरव का विषय है कि डॉ० धीरज मरोठी जैसे चिकित्सक जुड़े हुए हैं। डॉ० मरोठी की देख-रेख में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल २७ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया।

तेयुप अध्यक्ष विकास सिंघी एवं कार्यकारिणी समिति सदस्य एवं एटीडीसी के सह-संयोजक हेमंत बैद ने इस शिविर में पूर्ण सहभागिता दर्ज कराई।

रक्त परीक्षण शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता ने अपने आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के साथ मिलकर छत्रय कल्याण संघ ऑफ चिल्ड्रेन केयर संस्था के ४१ बच्चों के ब्लड ग्रुप निर्धारण शिविर का आयोजन Me & My Friends के सहयोग से किया, जिसमें रक्त परीक्षण रियायती दरों पर एटीडीसी पूर्वांचल द्वारा किया गया।

Me & My Friends संस्था से किशन कुमार अग्रवाल एवं सोनू जैन और पूर्वांचल तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा की सक्रियता से यह मानवीय कार्य हुआ।

वीतराग कार्यशाला का आयोजन

टी-दासरहल्ली।

तेयुप के तत्त्वावधान में मुनि रश्मिकुमार जी एवं मुनि प्रियांशु जी के सान्निध्य में वीतराग कार्यशाला का आयोजन हुआ। मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अध्यक्ष कुशल बाबेल में सभी का स्वागत करते हुए मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

मुनिश्री ने वीत्त-राग और वीतराग की असमानता को प्रश्नोत्तरी के माध्यम से श्रावक समाज के सामने प्रस्तुत यिका। सुमधुर गायक देवीलाल पितलिया ने भक्ति रस से समा बाँधा। अभातेयुप से सामायिक सह-प्रभारी राकेश दक की उपस्थिति रही। इस अवसर पर ट्रस्ट परिवार, महिला मंडल, परिषद परिवार की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार तेयुप मंत्री दिलीप पोखरना ने किया।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस को डिजिटल जागरूकता

श्रीडूंगरगढ।

तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस को डिजिटल जागरूकता के रूप में मनाया। इसके अंतर्गत सभी किशोरों ने अपने स्वयं के सोशल मीडिया एकाउंट्स से तंबाकू से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी देते हुए सृजनात्मक छवि शेयर की एवं जीवनशैली बेहतर बनाने के लिए उपाय बताए।

कार्यक्रम से पहले सभी किशोरों ने सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी चरित्रप्रभाजी के दर्शन किए एवं मंगलपाठ सुना।

सिविल हॉस्पिटल में कुर्सियाँ भेंट

सूरत।

तेयुप, सूरत द्वारा सिविल हॉस्पिटल को रक्तदान हेतु कुर्सियाँ भेंट दी गई। सिविल हॉस्पिटल से पधारे पूजा ने तेयुप का आभार व्यक्त किया एवं सदैव रक्तदान के क्षेत्र में तेयुप का सहयोग प्राप्त होता है, इस बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता, तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना, पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य एवं सूरत के ५० से भी अधिक सामाजिक संस्थाओं की उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर का आयोजन

भुज।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा पहली बार कच्छ का डेजर्ट (वाइट रण) एमबीडीडी के राष्ट्रीय सह-संयोजक सौरभ पटावरी की उपस्थिति में अदाणी ब्लड बैंक के सहयोग से आयोजन हुआ।

इस आयोजन में तेयुप अध्यक्ष आशीष बाबरिया, उपाध्यक्ष जिग्नेश दोसी, मंत्री महेश गांधी, सहमंत्री भावित मेहता, संगठन मंत्री आदर्शन संघवी और सभा के सहमंत्री सुरेंद्र भाई मेहता और तेयुप के सदस्य उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में २५ लोगों ने रक्तदान किया।

इस रक्तदान कैंप के लिए पूर्व धारासभ्य पंकज मेहता आदाणी ब्लड बैंक के काउंशिलर दर्शन रावल और चाणक्य एकेडमी के मानवीय कार्य के लिए विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के १३वें महाप्रयण दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण के साथ शिविर की शुरुआत हुई। तेयुप की एमबीडीडी टीम और विशेष रूप से अनुभव मुखर्जी, प्रकाश बरड़िया, ललित बैद आदि ने शिविर को सफलतापूर्वक संचालित किया। कुल ५३ यूनिट रक्त का संकलन हुआ।

शिविर में पूर्वांचल सभा के मंत्री प्रवीण पगारिया, परामर्शक नोरतमल बरमेचा, सुप्रसिद्ध गायक देवेंद्र बेंगानी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, अध्यक्ष विकास सिंघी, उपाध्यक्ष-प्रथम एवं एमबीडीडी के प्रभारी अमित बैद, एमबीडीडी के संयोजक विकास सुराणा सहित अनेक सदस्यों ने रक्तदान शिविर में अपनी सेवाएँ दी।

Avani Oxford-II एसोसिएशन को रक्तदान शिविर के आयोजन हेतु किए गए सहयोग के लिए मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया तथा इस सत्र के एमबीडीडी के प्रायोजक पवन जैन को साधुवाद दिया।

अच्छे श्रोता बनकर हो सकते हैं धर्म के मार्ग...

(पृष्ठ १२ का शेष)

आदमी को उपदेश-व्याख्यान जो हितकारी हो, उसे ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने कितनी बार प्रवचन किया होगा, कितने लोगों ने उनके प्रवचन को सुना होगा। ज्ञान एक ऐसा तत्त्व है, जिससे जीवन में परिवर्तन आ सकता है। वैरागी-साधु बनते हैं, तो कुछ तो उन्होंने सुना होगा, ज्ञान ग्रहण किया होगा। वाणी का कितना प्रभाव होता है। वाणी सुनकर आदमी पापों को छोड़कर, धर्म के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

साधु की वाणी से कभी-कभी ऐसा संबल मिल जाता है कि आदमी स्थिर हो जाता है, पाप से दूर हो जाता है। यह आचार्य भिक्षु और विजय सिंह पटवा के प्रसंग से समझाया। सामायिक भी हो गई और रुपये भी मिल गए। धर्म की जड़ हरी होती है। झटपट आदमी को धर्म नहीं छोड़ना चाहिए। सामायिक भी तो एक संपत्ति है। भीखण जी को भी दीक्षा की आज्ञा उनकी माँ से गुरुदेव रघुनाथजी के समझाने पर ही दी थी।

श्रोता मिलना चाहिए तो अच्छा वक्ता भी मिलना चाहिए। दोनों हाथ से ताली बजती है। वक्ता-श्रोता दोनों अच्छे मिलें तो कल्याण का काम हो सकता है। सुनने से अच्छी जानकारी मिल सकती है और आदमी मोक्ष की तरफ आगे बढ़ सकता है।

आज मूलचंद बोथरा के इस फार्म हाउस में आना हुआ है। पूरे परिवार में अच्छे धर्म के संस्कार बने रहें। खूब प्रामाणिकता, नैतिकता, अहिंसा, सामायिक, तत्त्वज्ञान, साधुओं की सेवा का लाभ के संस्कार बने रहें। खूब धार्मिक-आध्यात्मिक उन्नति हो, मंगलकामना।

पूज्यप्रवर के स्वागत में बोथरा परिवार की ओर से अयेश, राजेश, भाईयों एवं बहनों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि आदमी को एकांत दृष्टि नहीं रखनी चाहिए। अनेकांत दृष्टि वाला हर तरह से सुखी होता है।

हम अपनी आत्मा को मित्र बनाने का अवश्य प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

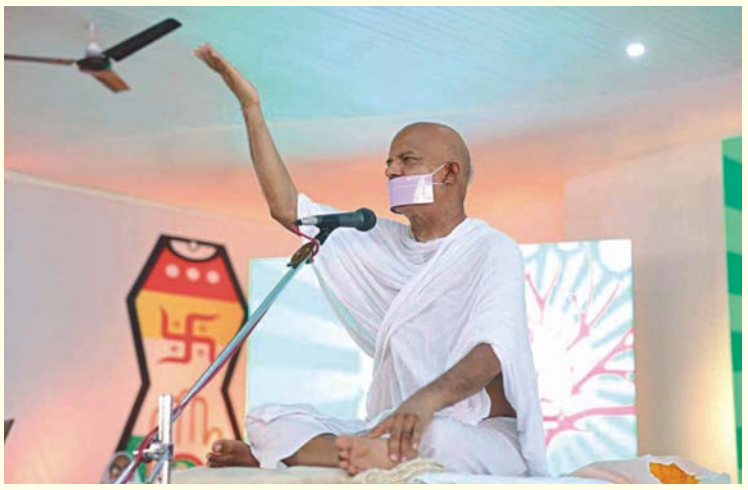

गंगाशहर, १४ जून, २०२२

गंगाणै के नाम से सुप्रसिद्ध गंगाशहर जहाँ श्रद्धा के अनेक परिवार हैं। गंगाशहर वह पावन धरा है, जहाँ आचार्यश्री तुलसी का धवल समारोह आयोजित हुआ था। आठवीं साध्वीप्रमुखा साध्वी कनकप्रभाजी का चयन यहीं हुआ था तो मुनि नथमल (आचार्यश्री महाप्रज्ञजी) को महाप्रज्ञ अलंकरण से यहीं नवाजा गया था। गंगाशहर में गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी का महाप्रयाण होने से यह धरा जन-जन की आस्था का केंद्र बन गई थी, तो आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपने युवाचार्य की धवल चद्दर मुनि महाश्रमण को ओढ़ाई थी। यहाँ अनेक वर्षों से साध्वी सेवा केंद्र भी चल रहा है।

गंगाशहर पर पूर्वाचार्यों की असीम कृपा रही है। आचार्यों के आठ चतुर्मास गंगाशहर-बीकानेर में हो चुके हैं। भैक्षव शासन के एकादशम् अधिशास्ता का विशाल जनमेदिनी के साथ आज गंगाशहर के तेरापंथ भवन में प्रवास हेतु पधारना हुआ।

मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए भगवान महावीर के प्रतिनिधि ने फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि हे! पुरुष, तुम ही तुम्हारे मित्र हो, फिर क्या बाहर मित्र खोज रहे हो। बाहर के मित्र की क्या जरूरत है।

दुनिया में मित्र तो होते हैं, मित्र बनाए जाते हैं। तुम ही तुम्हारे मित्र हो यह बात कैसे संयत बैठ सकती है। अनेक बातों को नय की दृष्टि से सापेक्षता के आधार पर समझा जा सकता है। निश्चय नय की दृष्टि एक बात सही होती है, वो व्यवहार नय से अलग बात हो सकती है। व्यवहार नय में जो सही बात होती है, वह निश्चय नय की दृष्टि से सही बात न भी हो।

आत्मा-प्राणी जैसा कर्म करता है, उसके अनुसार उसको फल भोगना पड़ता है। आत्मा मित्र है और आत्मा ही अमित्र-शत्रु है। दुष्प्रवृत्ति में लगी हुई आत्मा अमित्र होती है, सद्प्रवृत्ति में लगी आत्मा मित्र होती है। आत्मा ने सात वेदनीय का बंध किया है, तो आत्मा शरीर की दृष्टि से सुख में रहती है।

मित्र कोई कल्याण-मित्र हो, ऐसा मित्र अच्छा होता है, जो धर्म की दिशा में आगे बढ़ा दे। धर्म से गिरते हुए को बचा ले। जो आदमी गुस्सा-हिंसा करता है, वह अपनी आत्मा को दुश्मन बनाने का प्रयास कर रहा है। मान, छल-कपट करने वाला अपना अमित्र बन जाता है। अधर्म करने वाला दुश्मन बन जाता है।

हम अपनी आत्मा को मित्र बनाने का अवश्य प्रयास करें। दूसरों के प्रति मैत्री भाव, मंगलभावना रखने वाला अपना मित्र हो जाता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि मैत्री भाव रखने वाला दूसरों को भी अपना मित्र बना लेता है।

आज गंगाशहर चतुर्दिवसीय प्रवास हेतु आना हुआ है। यह तेरापंथ न्यास का भवन जहाँ गुरुदेव तुलसी ने महाप्रयाण किया था। थोड़े ही समय बाद भाद्रव शुक्ला चतुर्दशी को आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुझे अपने करकमलों से उत्तराधिकार की चद्दर ओढ़ाई थी। आचार्यश्री तुलसी ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का चयन एवं मुनि नथमल जी को महाप्रज्ञ अलंकरण प्रदान करवाया था। अनेक प्रसंग यहाँ आयोजित हुए थे।

१७ जून को गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण को २५ वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं, वो कार्यक्रम भी यहाँ आयोजित होने वाला है।

पूज्यप्रवर को बीकानेर की महापौर सुशीला तंवर एवं उनके पार्षदों ने बीकानेर नगर की चाबी अर्पित की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। पूज्यप्रवर ने दिवंगत मुनि राजकरण जी, मुनि पानमल जी, मुनि नगराज जी एवं मुनि बालचंद जी की भी स्मृति की। बीकानेर में सभी में सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति की भावना रहे, मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ के गौरव का इतिहास गंगाशहर के इतिहास के साथ जुड़ा है। मुझे यहाँ आकर गुरुदेव तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की स्मृति हो रही है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने यहीं तेरापंथ भवन में युवाचार्य मनोनयन पत्र लिखा था एवं चौपड़ा स्कूल में भरी परिषद में मुनि मुदित कुमार जी को दायित्व की चद्दर ओढ़ाई थी। मुनि पृथ्वीराज जी एवं साध्वी गंगाजी ने नए बसते हुए गंगाशहर में बहुत पुरुषार्थ कर श्रावकों को तेरापंथ की गुरुधारणा करवाई।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि शांति कुमार जी, मुनि श्रेयांस कुमार जी, सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी ने अपनी भावना श्रीचरणों में अर्पित की। साध्वीवृंद ने गीत से पूज्यप्रवर की अभिवंदना की।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिनंदन में स्थानीय सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, अंजु मालू, तेरापंथ महिला मंडल, सूर्यप्रकाश सामसुखा, तेरापंथ युवक परिषद, अणुव्रत समिति से राजेंद्र बोथरा, स्थानीय पार्षद सुमन छाजेड़, महापौर सुशीला तंवर, तेरापंथ न्यास से कन्हैयालाल फलोदिया, मिलापचंद चौपड़ा (टीपीएफ) ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि श्रावक के जीवन में सद्-संस्कारों का बड़ा महत्त्व है। उसके बिना वह सम्यक्त्व और श्रावकत्व से शून्य हो जाता है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण

अहमदाबाद।

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पर्यावरण संवर्धन एवं संरक्षण के प्रति जागरूकता दिखाते हुए सिग्नल वर्कशॉप साबरमती में अणुव्रत समिति अहमदाबाद, सेव-अर्थ ट्रस्ट, महावीर इंटरनेशनल मरूधर, तेरापंथ महिला मंडल, थली महिला मंडल के कार्यकर्ताओं ने पौधारोपण किया।

रेलवे के लोको पायलट संजय सूर्यबली, सेव अर्थ ट्रस्ट की समन्वयक संध्या यादव, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सुरेश बागरेचा, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री अनिता कोठारी, थली महिला मंडल, महावीर इंटरनेशनल मरूधर के वीर विनोद संकलेचा, तेयुप के सागर सालेचा आदि ने अपनी संस्थाओं की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी।

पौधारोपण कार्यक्रम में विशेष रूप से रेलवे के डॉ० राजेश मोदी, डॉ० उमेश सोलंकी, उत्तर तेरापंथी सभा के पूर्व मंत्री मुकन भंसाली उपस्थित रहीं। सेवा अर्थ ट्रस्ट की समन्वयक संध्या यादव ने आभार ज्ञापित किया।

'आप बनाम आप' व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

गंगाशहर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, गंगाशहर द्वारा बीकानेर स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन आशीर्वाद भवन में किया गया।

साध्वी कीर्तिलता जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने कार्यशाला की घोषणा की। विजय गीत का संगान पवन छाजेड़, विनीत बोथरा और भव्य संचेती द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन पंकज डागा द्वारा किया गया। तेयुप, गंगाशहर अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़ ने स्वागत वक्तव्य देते हुए पधारे हुए अतिथियों का स्वागत किया। तेयुप के सदस्यों द्वारा साध्वीश्री जी और अभातेयुप सदस्यों को किट भेंट की। शाखा प्रभारी चमन दुधोड़िया, व्यक्तित्व विकास कार्यशाला राष्ट्रीय सहप्रभारी अमित गन्ना और अभातेयुप संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी ने अपना वक्तव्य रखा।

साध्वी कीर्तिलता जी ने कहा कि कोई भी कार्य किसी न किसी महत्त्वपूर्ण कारण से संपादित होता है। आवश्यक है लगातार मेहनत करने की। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने कहा कि हम सभी को अपने संकल्पों के द्वारा लक्षित मंजिल को प्राप्त करना है। अभातेममं अध्यक्षा नीलम सेठिया ने कहा कि आज की कार्यशाला नकारात्मकता को त्यागने की प्रथम सीढ़ी है।

अभातेयुप सदस्य मनीष बाफना ने बताया कि कार्यशाला के मुख्य वक्ता मोटिवेशनल स्पीकर साजन शाह ने उपस्थिति लोगों को छोटी-छोटी बातों से मेमोरी को तेज करने के गुर सिखाए। कार्यशाला संयोजक भरत गोलछा ने बताया कि कार्यशाला में भाग ले रही सभी स्कूलों, संस्थाओं व इंस्टिट्यूट को तेयुप, गंगाशहर द्वारा सम्मानित किया गया। मुख्य वक्ता साजन शाह को तेरापंथी सभा मंत्री रतन छलाणी, जतन संचेती, पीयूष लुणिया, पवन छाजेड़, विजेंद्र छाजेड़, नवरतन बोथरा, मनोज सेठिया, मिलाप चोपड़ा द्वारा सम्मानित किया गया।

कार्यशाला में अभातेयुप सदस्यों, तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन लुणकरण छाजेड़, अभातेममं की बहनों, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष महावीर रांका व महामंत्री हंसराज डागा सहित अनेक ट्रस्टियों की उपस्थिति रही। कार्यशाला संयोजक भरत गोलछा ने आभार ज्ञापन किया। तेयुप मंत्री देवेंद्र डागा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

स्नेह मिलन का आयोजन

टी-दासरहल्ली।

तेयुप, टी-दासरहल्ली द्वारा प्रथम बार स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। हर एक तेयुप सदस्य परिवार को इसमें जोड़ा गया। इसका मुख्य उद्देश्य तेयुप साथियों में जागृति का संचार करना था। मंगाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

अभातेयुप से पधारे महामंत्री पवन मांडोत एवं प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरना, मुख्य प्रायोजक राकेश गांधी, सह-प्रायोजक भगवतीलाल मांडोत एवं सभी अतिथि का स्वागत अध्यक्ष कुशल बाबेल ने किया।

अभातेयुप पदाधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त किए। तत्पश्चात सभी तेयुप पदाधिकारियों को स्मृति चिह्न भेंट कर स्नेह मिलन आयोजन की प्रशंसा की। इस अवसर पर ट्रस्ट परिवार, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री दिलीप पोखरना ने किया। आभार ज्ञापन सहमंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और चारित्र युक्त...

(पृष्ठ १२ का शेष)

साध्वीवर्या जी ने कहा कि मनुष्य के पास कला हो तो उसे कोई छीन नहीं सकता। आदमी के पास अनेक कलाएँ हैं। पर सर्वश्रेष्ठ कला है—जैन जीवनशैली। जीवन जीने की कला आ गई तो सब कुछ आ गया। जीवन सुखमय बन सकता है। जैन जीवनशैली के नौ सूत्र हैं, जिनको सूक्ष्मता से समझाया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में मुनि राजकुमार जी, समणी जयंतप्रज्ञा जी, समणी सन्मतिप्रज्ञा जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर के अभिवंदन स्वागत में मूर्तिपूजक संघ से सुरेंद्र जैन, स्थानकवासी संघ से मोहनलाल सुराणा, दिगंबर समाज से एडवोकेट विनोद जैन, जैन सभा अध्यक्ष जैन लूणकरण छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान से हंसराज डागा, पूनमचंद छाजेड़, ज्ञानशाला, मूलचंद सामसुखा परिवार एवं सभा मंत्री रतन छल्लाणी ने अपने भावों की अभिव्यति दी।

गवरादेवी सेठिया ने ३४वाँ वर्षीतप का प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से लिया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि आदर्श पुरुष वीतराग होता है। जैन धर्म में तीन रत्न—सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र की आराधना होती है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जून - 3 जुलाई, 2022

✦ *जीवन की एक उपलब्धि होती है प्रसाद की प्राप्ति। प्रसाद के संदर्भ में कहा गया है कि गुरु के प्रसाद की इच्छा रखनी चाहिए। प्रसाद का अर्थ है प्रसन्नता।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और चारित्र युक्त हो हमारी जीवनशैली : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ भवन, गंगाशहर, १६ जून, २०२२

तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी का गंगाशहर प्रवास तीसरा दिन। महामनीषी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी जीवन जीता है, आदमी ही नहीं, सृष्टि का हर प्राणी जीवन जीता है। जीवन जीना एक सामान्य बात है। एक लक्ष्य के साथ सम्यक् तरीके से जीवन जीना विशेष बात हो जाती है।

कलापूर्ण जीवन जीना अच्छा जीवन हो सकता है। प्राचीन साहित्य में ७२ कलाओं का नामोल्लेख मिलता है। ७२ कलाओं में कोई कुशल निष्णात हो गया, पंडित बन गया फिर भी सभी कलाओं में श्रेष्ठ कला धर्म की श्रद्धा के लिए एक मुख्य बात है, जो जिनेश्वर भगवान ने प्रवेदित किया है, वही सत्य है। व्यवहार में तत्त्वज्ञान को समझकर जो ठीक लगे उसे स्वीकार करूँ। सम्यक्त्व के लिए कषायमंदता की साधना हो।

परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी ने नव आयामी जैन जीवनशैली की प्ररुपणा की है। सम्यक् दर्शन के साथ नमस्कार मंत्र जुड़ा हो। जैन वही है, जो णमोकार धार हो। नव तत्त्व को समझें। सम्यक् ज्ञान के लिए हमारे ग्रंथ, जैन आगम हैं, उनका स्वाध्याय होता रहे। सम्यक् चारित्र के लिए आचार ठीक हो। श्रावकों का आचार भी अच्छा हो। खान-पान की शुद्धि हो, नशामुक्ति जीवन में रहे।

कला को नहीं सीखा है, तो वे पंडित अपंडित रह जाते हैं।

आज जैन जीवन शैली का विषय रखा गया है। साध्वीवर्याजी ने जीवनशैली के बारे में बहुत संक्षेप में अच्छी बातें बताई हैं। जीवनशैली किस प्रकार की होनी चाहिए? जीवनशैली से पहले लक्ष्य का निर्धारण होना चाहिए। मुझे जीवन क्यों जीना है। इसका समाधान हमें जैन आगम में मिलता है। संक्षेप में बताया गया है। इस देह को धारण करें, जीवन जीएँ क्यों? पूर्व कर्मों का क्षय करने के लिए, मोक्ष प्राप्ति के लिए जीवन जीएँ।

गुणस्थानों की दृष्टि से देखें तो चौदहवाँ गुणस्थान मनुष्य के सिवाय किसी भी प्राणी में नहीं आ सकता। सिद्धांत के अनुसार तो छठा गुणस्थान से लेकर चौदहवें तक के गुणस्थान मनुष्य में ही प्राप्त हो सकते हैं।

पाँचवाँ गुणस्थान तो मनुष्यों के अलावा तिर्यंचों में संज्ञी पंचेंद्रिय कई श्रावक बन सकते हैं। देवों में तो पाँचवाँ, गुणस्थान भी नहीं आ सकता। इसलिए मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जो मोक्ष की उत्तम साधना कर सकता है। जीवन का लक्ष्य बने कि मैं पूर्व कर्म क्षय करूँ, मोक्ष प्राप्ति की दिशा में इस जीवन में आगे बढ़ूँ।

जीवनशैली का निर्धारण लक्ष्य निर्धारण के बाद बढ़िया हो सकता है।

दर्शन हमारा शुद्ध हो। शुद्ध देव, शुद्धगुरु और शुद्ध धर्म के प्रति आस्था हो। यह जैन जीवनशैली का एक सूत्र हैं वही सत्य है, जो जिन केवली ने फरमाया है। कौन से धर्म-संप्रदाय पर श्रद्धा हो।

हमारे शादी में धर्म का प्रभाव हो, जैन संस्कार पुष्ट रहें। हमारा तत्त्वज्ञान का विकास आत्महत्या, भ्रूण हत्या से बचने का प्रयास हो। जैन-अजैन कोई हो जीवनशैली लक्ष्य के अनुरूप हो। मोक्ष हमारा लक्ष्य है, उसके अनुसार सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र पर आधारित जीवनशैली हो।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

अच्छे श्रोता बनकर हो सकते हैं धर्म के मार्ग पर अग्रसर : आचार्यश्री महाश्रमण

बोथरा फार्म हाउस, १८ जून, २०२२

गंगाशहर का चार दिवसीय प्रवास संपन्न कर आचार्यश्री महाश्रमण जी आचार्य तुलसी समाधि स्थल पर पधारे। वहाँ पर निर्मित आचार्य तुलसी उपासक साधना केंद्र का अवलोकन कर श्रीडूंगरगढ़ की ओर विहार करते हुए आज बोथरा फार्म हाउस पधारे। मार्ग में पीबीएम हॉस्पिटल स्थित आचार्य तुलसी कैंसर रिसर्च सेंटर एवं श्रीडूंगर राजकीय महाविद्यालय भी पधारे।

बोथरा फार्म हाउस में जिन वाणी के व्याख्याता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में सुनने का काम भी पड़ता है और बोलने का काम भी पड़ता है। कर्णेंद्रिय ठीक है, तो आमतौर पर सुनने का मौका भी मिलता है। भाषण शक्ति ठीक है, तो बोलने का काम भी पड़ता है।

मौन का महत्त्व बताया गया है, पर बोलने के समय बोलना भी चाहिए। सुनने के समय सुनना भी चाहिए। शास्त्रकार ने कहा है कि सुनकर आदमी कल्याण को जान लेता है, सुनकर वह पाप को भी जान लेता है। कल्याण और पाप दोनों को सुनने के बाद जो श्रेय है, हितकर है, कल्याणकारी है, उसका आचरण करना चाहिए।

तीन शब्द हैं—हेय, उपादेय, ज्ञेय। हेय जो छोड़ने लायक है। जो ग्रहण करने लायक है, वह उपादेय होता है। जो जानने लायक है, वह ज्ञेय होता है। हम सुनते हैं, सुनने से हमें ज्ञान होता है। ज्ञान हो गया तो विज्ञान विशेष ज्ञान हो गया—हेय क्या और उपादेय क्या? हेय को छोड़ने का प्रयास हो, उपादेय को ग्रहण करने का प्रयास हो।

जीव-अजीव आदि नव तत्त्व हैं। संवर, निर्जरा और मोक्ष—ये तीन तत्त्व उपादेय हैं। ज्ञेय नव ही तत्त्व है। हेय पाप, आश्रव, पुण्य और बंध है। जीव की असद् प्रवृत्तियाँ हेय है। कर्म पुद्गल अजीव है, वे भी हेय है। नव तत्त्व में तीन तत्त्व उपादेय है, इनको ग्रहण करने का मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास होना चाहिए।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**